का अत्यन्त शुद्ध उच्चारण व मधुर आवाज में रिकार्ड किया
कैसेट

कौन सा मुँह ले महुबे जावैं ❋ देहैं कौन खबर हम जाय।
बोली गिजनी पति अपने से ❋ पथरीगढ़ को ढूँढ़ो नाय॥
गिजनी प्यारीकी बातैं सुनि ❋ जोड़ा उड़ा पंख फैलाय।
ठीक दुपहरी के अम्बल में ❋ पहुँचे पथरीगढ़ में जाय॥
छत पर ठाढ़ी मछला रानी ❋ शीशमहल में करे बिचार।
गिजऔगिजनीआसमानसे ❋ नीचे देखा आंख पसार॥
तब गिज बोले हैं गिजनी से ❋ मादी सुनियें बचन हमार।
जौन रूप की खड़ी ये रानी ❋ ऐसे ही मंडरीक की नार॥

बहुत रोज से हम नहि देखा ❋ ताते सके नहीं पहिचान।
गिजनी बोली तब जोड़ा से ❋ हम बतलाती ठीक निशान॥
करनफूल मछलाका चमके ❋ मेरी आँख गई चौंधाय।
गिजऔगिजनीदोनोंमिलके ❋ अपने पंख दिये फैलाय॥
पंख ओट में सूरज छिपिगे ❋ आभा पड़ी महल में जाय।
नहीं बदरिया आसमान में ❋ छाया भई कहाँ से आय॥
यही सोच मन मछला रानी ❋ ऊपर हेरा आंख पसार।
उड़ते देखा जब गिजनी को ❋ भै मन खुशी मछलदे नार॥

ताबेदार मेरे नैहर के ❋ लेकर आये खबर हमार।
वोही उड़ते आसमान में ❋ मछला रानी कियो बिचार॥
कियोइशारातब गिजना को ❋ रानी जौन महोबे क्यार।
पाय इशारागिजऔगिजनी ❋ आये जहां मछलदे नार॥
जोड़ा बैठ गया छज्जों में ❋ गिजना मछला से बतलाय।
सुनो दुलारी राघोमच्छ की ❋ तुमकोलाजशरम कछुनाय॥
जनमतमछला तुममरजाती ❋ दओ दोनोंकुल दागलगाय।
बारो इन्दल छोड़ के भागी ❋ ऐसी मस्ती लई दबाय॥

सिंह छोड़ के स्यार के आई ❀ सारी इज्ज़त दई बिगार ।
तापर ज्वाब दिया मछला ने ❀ इसमें कछु नहिं दोष हमार ।।
झूलन आई थी बागों में ❀ सङ्ग सहेली साथ लिवाय ।
ज्वालासिंह पथरी का राजा ❀ झूले पास पहूँचा आय ।।
कहा सुनी बागों में हो गई ❀ जलसिंह मुझसे कहा सुनाय।
पलंग तिहारो पथरीगढ़ में ❀ लेंगे किसी रोज़ मंगवाय ।।
याद भूलि गई उनबातन की ❀ सारी जादू धरी उतार ।
बीर मूँदि डिब्बा में दीन्हें ❀ लागी करन आय सुबनार ।।
देबी चण्डी पथरी वाली ❀ पलंगसहितमोहिंलियामंगाय ।
हमबंदिकाटैं ज्वालासिंहकी ❀ अपना यहां कोई है नाय ।।
तब समझाया है गिजनी ने ❀ राखो धीर सुन्दरी नार ।
हुक्मजो देते हमको आल्हा ❀ लेते पङ्खों में बैठार ।।
थोड़े दिन की और कसर है ❀ बैठे जपो राम के नाय ।
खबर गुज़ारैं गढ़ महुबे में ❀ ले जांय तुम्हें बनाफर राय ।।
देरी समझो खबर भरे की ❀ पथरी कर दें पनिया ढार ।
इतना कहिके वहाँ से उड़िके ❀ पहुँचे आल्हा के दरबार ।।
देखी सूरत जब गिजनों की ❀ आल्हा बोला बचन सुनाय ।
कौन देश गै मछला रानी ❀ सो तुम दीजे मोहिं बताय ।।
तापर ज्वाबदिया गिजनों ने ❀ सुनलो मंडरीक औतार ।
पता न लागे कहुँ मछला का ❀ लीन्हें सिगरे देश निहार ।।
सुनिके बातैं ये गिजनों की ❀ आल्हा गया सनाका खाय ।
क्या मुंह लेकर रहें महोबे ❀ है बदनामी बहुत सिवाय ।।
मारि कटारी हम मर जावें ❀ ज़िंदा रहें महोबे नाय ।
बोला गिजना तब आल्हा से ❀ नाहक देवो प्राण गंवाय ।।
लई परीक्षा हमने तुम्हरी ❀ आल्हा शूर बीर सरदार ।

मन का माना भोजन खाना ❀ गांजा चरस पिलावैं लाय।
रोज लंगोटी तुम्हरी धोवैं ❀ सारा लावैं हुकुम बजाय॥
बोला जोगी उन लड़कों से ❀ बेटा सुनों लगाकर ध्यान।
रमता जोगी बहता पानी ❀ इनका कतहूँ नहीं ठिकान॥
आजहै धूनी इसकु वना पर ❀ भोरहिं अन्तहिंकरैं मुकाम।
सत्य सुमिरनी लिये हाथ में ❀ जपते सदा राम के नाम॥
हाथ जोड़कर लड़के बोले ❀ जोगी बंशी देव सुनाय।
जबमन देखा बहु लड़कों का ❀ सैयद बंशी दिया बजाय॥
गली २ औ टोला २ ❀ महलन खबर पहूँची जाय।
तान बांसुरी की मोहनी है ❀ तिरियां लगीं झरोखेआय॥
बड़े कुआं एक साधू आये ❀ गाते बड़ी सुरीली तान।
सुनी प्रशंसा जब योगी की ❀ सुवा पंखिनी चतुर सुजान॥

## जोगी के पास सुवापंखिनी को जाना।

कहने लागी यों माता से ❀ दोनों हाथ जोरि सिर नाय।
जोगी आया एक कुंवा पर ❀ जिसका भेष न बरना जाय॥
भारी शोहरत है नगरी में ❀ जाते दर्शन को नर नारि।
हमें इजाजत माता दीजे ❀ दर्शन करैं जोगिया क्यार॥
सुनिके बातैं ये बेटी की ❀ माता बोली बचन रिसाय।
बाप तुम्हारे गढ महुबे से ❀ मछला रानी लाये चुराय॥
बनाफरों से करी दुश्मनी ❀ जिनकी बड़ी बुरी है मार।
हैं बहुरुपिया महुबे वाले ❀ जिनका नहीं कोई इतबार॥
भिड़हा बेंदुल का चढ़वैया ❀ लड़िका रोवत जाय चुपाय।
नटवा भटवा बेड़िया बनकर ❀ बन्जर देश देत करवाय॥
कहुँ २ जोगी कहुँ २ कंजर ❀ कहुँ हरजोता बने किसान।

सांझ के गढ़िया जिनकी डाटें ❀ होते भोर करें मैदान ॥
होवे छलिया कोइ महुबे का ❀ आया जोगी भेष बनाय।
जइहो दरश करन जोगी का ❀ तेरा बाप खफा हो जाय॥
हमहूँ फजिहत तेरे पीछे ❀ यामें पावेंगी सुकुमारि।
देंय न आज्ञा हम जाने को ❀ बेटी मानों कही हमार ॥
सुपापंखिनी तब झुंझलाकर ❀ यों माता से कही पुकार।
क्या धन हीन महोबे वोले ❀ मंगिहैं भीक तुम्हारे द्वार ॥
पारस बटिया चन्देले घर ❀ लोहाछुवत स्वानहोय जाय।
कौन ज़रूरत उनको माता ❀ जोगी बने यहां जो आय॥
लेकर भोजन जायँ कुवां पर ❀ असली लाऊं भेद लगाय।
लड़िका होई जो राजों का ❀ भोजन खाय स्वाद के माय॥
होइहै बालक जो जोगी का ❀ जाने स्वाद अन्न का नाय।
आम खास से वह सन्यासी ❀ पेट की अगिनीलेय बुझाय॥
होत संत तो करिके दर्शन ❀ उनको भोजन देंय जिमाय।
निकले छलिया जो महुबे का ❀ उसकी लाऊं दंड बंधाय ॥
यह मन भाय गई माता के ❀ आज्ञा तुरत दई फरमाय।
पाय इजाजत महतारी की ❀ लौ सोने को थाल मंगाय॥
धरे छतीसो तामें ब्यंजन ❀ अरसा किया जरा भी नाय।
भेज के बांदी संग सहेली ❀ अपने महल लियो बुलवाय॥
खोलिबकससबकपड़े पहिने ❀ सिरके लीन्हें केश संवार।
कोमल गातरूप अतिसुन्दर ❀ गोरो बदन दुलारी क्यार॥
मुखभरपान सींकभर सुरमा ❀ दोउ नैनन में लिया लगाय।
चली लाड़लीज्वालासिंहकी ❀ सबसखियों कोसाथलिवाय॥
जहां पे धूनी थी जोगी की ❀ सुवापंखिनी पहुँची जाय।
लागे कौंधा ज्यों बादल में ❀ इकदम चमकपड़ेदिखलाय॥

तैसे लपकी सुवापंखिनी ❀ डटती नज़र सामने नाय।
मिचगईं आंखैं दोउसैयदकी ❀ कौंधा हुआ सामने आय॥
माला सरक गिरो हाथों से ❀ दोनों नैन बंद होय जाय।
होकर मौन बैठ धूनी पर ❀ मुंहसे बात कहे कछु नाय॥
दोउ करजोर खड़ी सुकमारी ❀ सुवापंखनी शीश नवाय।
कहै लड़ैती ज्वालासिंह की ❀ खोलो पलक डिगम्बरराय॥
नाम वतन का बोलो बाबा ❀ है गुरुद्वारा कहां तुम्हार।
कछू ज्वाब सैयद नहिं दीन्हों ❀ बेटी गई पूंछ कर हार॥
खोलैं नहीं पलक वह बाबा ❀ ना कछु मुंह से कहैं सुनाय।
गुस्सा आई तब बेटी को ❀ बोली सखियों से झुंझलाय॥
खप्पर झोली औ मृगछाला ❀ हाथ को माला लेव छिनाय।
राख उड़ा दो सब धूनी की ❀ बङ्गला खबर देव पहुँचाय॥
यह नहिं जाया है जोगी का ❀ रमठगिया सा पड़े दिखाय।
जादूगर बङ्गाल देश का ❀ आया यहां मूड़ मुड़वाय॥
करिके जादू कुवां के ऊपर ❀ छलिहै कोई नवेली नार।
जोगी नाहीं वह रस भोगी ❀ केहु राजा का राजकुमार॥
सुवापंखिनी की बातैं सुनि ❀ बोला सैयद आँख उठाय।
फेरैं माला हम ईश्वर की ❀ तुम सब काहकरो बकवाय॥
गुरू निरंजन के चेला हैं ❀ औ मङ्गलगिर नाम हमार।
देश हमारो बंगाला है ❀ मेला किया बटेश्वर क्यार॥
छाप द्वारिका की ले आये ❀ आये चारो धाम मंझाय।
आजकी रैन टिकैं कुँवना पर ❀ होते भोर चले हम जाँय॥
नकली जोगी की बातैं सुनि ❀ सुवापंखिनी कही सुनाय।
भूल चूक तकसीर पड़ी जो ❀ उसको जोगी देहु भुलाय॥
करिके कूच चलो कुवना से ❀ महलन धूनी देहु लगाय।

मन के माने भोजन करियो ❋ जपियो नहीं राम के नाय ॥
भजनसेफुरसतजबतुमपाना ❋ धुनि बंशी की दियो सुनाय ।
चारि महीना चौमासा भरि ❋ महलन रहो डिगम्बर राय ॥
बोले सैयद तब बेटी से ❋ क्योंमोहिंलोभरहीदिखलाय।
होता रहना जो महलों में ❋ काहे लेते मूड़ मुड़ाय ॥
रुपया पैसा मोहर असरफी ❋ हमको चाह गांव की नाय ।
नहीं चाहना है तिरियन की ❋ जपते सदा राम रघुराय ॥
चुटकी बनै एक दै दीजै ❋ कुंवना डारि भोरियां खांय ।
सुनिके बानी बैरागी की ❋ भोजन थाल दिया सरकाय॥
साँचे चेला तुम योगिन के ❋ औ सच्चा है ज्ञान तुम्हार ।
तुम हित भोजन हम लाई हैं ❋ बाबा जेंय लेव जिवनार ॥
सुवाप खिनी की बातें सुनि ❋ कहने लगा तलंसी राय ।
भोजन भर दो इस तूंबे में ❋ फुरसत अभी भजनसे नाय॥
खट्टे मीठे से मतलब क्या ❋ सिगरे भोजन देव मिलाय ।
होंगे फ़ारिग़ जब पूजा से ❋ तब हम भोजन लेंगे खाय॥
जावो चली आप महलों को ❋ तुमसे सांची दिया बताय ।
सुनिके बातें ये जोगी की ❋ सब सखियनने कही सुनाय॥
नहीं बनाफल यह महुबे का ❋ जलम का जोगीपड़े दिखाय।
ससय दूर भई बेटी की ❋ महलन गई कूच करवाय ॥
हाल बताया सब माता से ❋ जोगी सांच पड़े दिखलाय।
तरह २ के व्यंजन उसने ❋ सब तूंबा में धरे मिलाय ॥
लियो परीक्षा हम जोगी की ❋ लगता नहीं बनाफल राय ।
जलम का जोगी वह सरभंगा ❋ बैठा मगन जपै हरिनाम॥
घर घर चर्चा बैरागी की ❋ दर २ कहें नारि नर गाय ।
ऊदन सोवत हैं बागों में ❋ अबतक सैयद लौटा नाय॥

उसको गये बहुत भै देरी ❀ हम भी चलें कूच करवाय।
बनि मनिहार चला है ऊदल ❀ पहुँचो पथरीगढ़ में जाय॥
ले लेवचुरियां कोई मिहरियां ❀ चौक में ऊदल रहे पुकार।
रंग न ढरिहै इन चूरिन का ❀ पक्के दिया नगीना डार॥
हरी औ पीरी धानी रंग की ❀ जिसमें छींटा धरे महीन।
चूड़ी फ़िरोजी और शरबती ❀ पहिनो छांट २ कर बीन॥
कोइ २ चुड़ियां रंग बैंजनी ❀ दाखी और गुलाबी लाल।
रंग कंजई औ अठपहलू ❀ हैं नगदार पुरानी चाल॥
रंग सोहनी सब्ज बिल्हौरी ❀ काहू धरे तरैया छोप।
लाल के जोड़ा बने निराले ❀ पहिनो आय आपनी नाप॥
गली २ औ गलियारन मा ❀ चूड़ी बेंच रहो मनिहार।
महलतिवारिनअटाअटारिन ❀ नारिन फूल रही फुलवार॥
लड़का रोवत तिरिया छोड़ैं ❀ मनिहारे की सुनत पुकार।
निकर के द्वारे ठाढ़ी हो गई ❀ बहंजू पकड़िकिंवारनक्यार॥
पड़ी खलभली गलियारन में ❀ सुवापंखिनी सुनी पुकार।
बोलन लागी महतारी सों ❀ आया द्वार एक मनिहार॥
तरह २ की चूड़ी बेंचे ❀ माता हमें देव पहिनाय।
इतनीसुनकर माता जलगई ❀ बोली बेटी से रिसियाय॥
कोई बनाफ़र महुबे वालो ❀ पथरी आया बनि मनिहार।
बाप तुम्हारा जो सुनि पावे ❀ डारे मोहिं जान से मार॥
तापर ज्वाब दिया बेटी ने ❀ माता काह गई बौराय।
क्यों मनिहारबनाफ़रबनिहैं ❀ उनको कौन पड़ी परवाय॥
जा दिन अइहैं महुबे वाले ❀ धरती मंगिहैं धर्म दुवार।
सुवापंखिनी की बातें सुनि ❀ माता बोली बचन सुनाय॥

खबर न पावैं पिता तुम्हारे ❀ तुम मनिहार लेव बुलाय।
पहिन के चूड़ी जल्दी बेटी ❀ बाहर दीजौ उसे कढ़ाय॥
यह मन भाय गई बेटी के ❀ औ बांदी को दिया पठाय।
जहां पै ठाढ़ो था मनिहारा ❀ बांदी बोली बचन सुनाय॥
तुम्हें बोलावै सुवापंखिनी ❀ चल के चुड़ियां दो पहिनाय।
बड़ी खुशी ऊदन मन बाढ़ी ❀ विधना दीन्हों काम बनाय॥
बांदी साथ चला है ऊदल ❀ कीन्हें चुड़ियन के रुज़गार।
बारह महल बने शीशा के ❀ सोरह महल रेखता क्यार॥
शीशमहल के दस दरवाजे ❀ नग हीरन के जड़े किंवार।
खींच बरन्डा दरियाई का ❀ झालरलौटमोतियनक्यार॥
जहां पै बैठी सुवापंखिनी ❀ हाजिर भयो जाय मनिहार।
दौड़ी बांदी महलन वाली ❀ मोढ़ा दिया फ़र्स में डार॥
ठाढ़े ऊदन रनिवासों में ❀ इत उत देखें नजर घुमाय।
मार पेंच का महल बना है ❀ मछला कहीं दिखाती नाय॥
भारी सोच हुआ ऊदल को ❀ महुबे काह बतैहैं जाय।
झूठी खबर कही गिजनों ने ❀ भाभी पथरी आई नाय॥

## ऊदल का सुवापङ्खिनी को चूड़ी पहनाना

यही सोच में ऊदल बैठा ❀ तब बेटी ने कही सुनाय।
कौन देश के तुम मनिहारे ❀ अपनो दीजे नाम बताय।
सुवापंखिनीं की बातैं सुनि ❀ झोला धरा धरनि के माय
सोंटा दावि बगल में अपना ❀ बोला नैनन नीर बहाय।
नगर महोबा धुर दक्खिनमें ❀ सुन्दर शहर बसागुलज़ार
तहां के राजा परमालिक हैं ❀ जिनको जानत सब संसार
करी चढ़ाई पृथीराज ने ❀ नगरमहोबा लिया लुटाय

बंश न राखो बनाफलों का ❀ सबको डारो भूप मराय ॥
लेकर डोला सब रानिन के ❀ दिल्ली घास छुलाई जाय ।
डारि जरीबें गढ़ महुबे में ❀ सारी भूमि लई नपवाय ॥
करी उगाही दूनी चौड़ा ❀ भूखों मरने लगे किसान ।
क़िस्मत फूट गई रैयत की ❀ अब नहिं लागे कहूँ ठिकान ॥
दहशत भारी है चौड़ा की ❀ मुंशी जौन पिथौरा क्यार ।
पड़ी तबाही हमरे ऊपर ❀ तब हम भागे छोड़ घरबार ॥
पेट के कारण हमने बेटी ❀ करलयेचुड़ियनका रुज़गार ।
मनिहारे की सुनके बेटी ❀ बोली माता से ललकार ॥
जौन बात का खटका भारी ❀ ईश्वर दीन्हों काम बनाय ।
मरे बनाफर महुबे वाले ❀ माता डारो कथा कहाय ॥
बहू बनाया मछला हमको ❀ तासे बदला लेव निकार ।
मन के चीते नारायण ने ❀ कीन्हें पूरण काज हमार ॥
झोली खोल तुरत ऊदल ने ❀ चुड़ियाँ महल दिया फैलाय ।
अब नग चमक रहे चुड़ियोंके ❀ डटती नज़र सामने नाय ॥
कहे दुलारी ज्वालासिंह की ❀ कीमत काह चूड़ियन क्यार ।
काह बतावें तमसे कीमत ❀ बोला धीरे से मनिहार ॥
जबसे घर महुबे का उजड़ा ❀ तबसे क़िस्मत फूटि हमार ।
पहिनी चूड़ी जब मछला ने ❀ दीन्हों कड़ा सूबरन क्यार ॥
फुलवा रानी को हम बेटा ❀ आये चूड़ी जब पहिनाय ।
नाम हमारे उसके पति ने ❀ दी जीगर तुरत लिखवाय ॥
अब हम सोचें उस कलहा को ❀ जाको नाम उदयसिंह राय ।
कदरदान महुबे के मरिगे ❀ क्या हम मोल देंय बतलाय ॥
मोल तोल हम करें न तुमसे ❀ आओ चूड़ी देंय पिन्हाय ।
समझ तुम्हारे में जो आवै ❀ दीजे कीमत मोहिं चुकाय ॥

सुनिके बातें मनिहारे की ❋ बेटी दीन्हों हाथ बढ़ाय।
पहिले बन्द चढ़ाये ऊदल ❋ मनियादेव के चरण मनाय॥
दूजी चूड़ी जभी पिन्हाई ❋ ले लेव नाम मल्हन्दे क्यार।
तीजी चूड़ी जब डारी है ❋ सुमिरो मंडरीक औतार॥
चौथा बन्द मिलाया ऊदल ❋ भाभी सुमिर मछलदे नार।
पीछे चूड़ी आशीशों की ❋ ऊदन दियो हाथ में डार॥
पकड़ि कलाई करी चूड़ी ❋ जब ऊदल ने दई चढ़ाय।
चूड़ी फूटि चुभी हाथों में ❋ तब बेटी ने कही रिसाय॥
अबहीं बांदी जाव कचेहरी ❋ करदेव खबर राज दरबार।
लागे छलिया कोइ महुबे का ❋ इसकी जात नहीं मनिहार॥
खाल खिंचाकर इस पाजी को ❋ चील्हन मांस देउ चुनवाय।
हाथ जोड़ तब बांदी बोली ❋ क्यों परदेशी रही मराय॥
पास भेजिके रनि मछला के ❋ पहिले कर लीजे पहिचान।
फिर मरवावे मनिहारे को ❋ बेटी कहा लीजिये मान॥
सुनिके बातें घर बांदी की ❋ सुवापंखिनी कही सुनाय।
बोल चररे मछला बोले ❋ सो हिरदे में गये समाय॥
पास न जाऊं मैं लुच्ची के ❋ ना मैं उसको सकूं बुलाय।
ले मनिहारे को तुम बांदी ❋ लाओ उससे जांच कराय॥

## बांदी व ऊदल का मछला के पास जाना

बीच में करके मनिहारे को ❋ बांदी अगल बगल हो जाय।
जौन महल में मछला रानी ❋ मनिहारे को गई लिवाय॥
पास जाय मछला के ऊदल ❋ बोला चरनन शीश झुकाय।
मैं हूँ लड़िका मनिहारे का ❋ चूड़ी बेंच २ कर खांय॥
ऊदल देवर की सूरत लखि ❋ मछला गई तुरत पहिचान।
रानी चतुर महोबे वाली ❋ तुरते लिया इशारा जान॥

बात बनाकर फड़पर मछला ❀ मुखसे बोली गिरा उचार।
मौला बकस तुम्हारे अब्बा ❀ बेटा करैं कौन रुजगार॥
क़िस्सा सारा गढ़ महुबे का ❀ नबीबकस तुम देव बताय।
वो छलछन्दी महुबे वाला ❀ बोला नैनन नीर बहाय॥
चढ़ा पिथौरा दिल्ली वाला ❀ लेकर सात लाख तलवार।
बंश बनाफर का राखो न ❀ महुबाकरदियोपनियाढार॥
सुनिके बातैं ये ऊदन की ❀ बाँदी आपस में बतलाय।
साँचो लड़िका मनिहारे का ❀ दीखे नहीं बनाफर राय॥
वहां से चलिके सारी बांदी ❀ पहुँची सुवापंखिनी पास।
हाल गुजारा सब बेटी सों ❀ हो गई बनाफरों की नास॥
मौला बकस नाम अब्बा का ❀ उसका नबीबकस है नाम।
नगर महोबा का बाशिंदा ❀ किस्सा सारा सही तमाम॥
छोड़िके मछला अब ऊदलको ❀ तीसर रहा महल कोइनाय।
जो कुछ बीती है मछला पर ❀ रोय २ हाल रही बतलाय॥
नाहक देवर हम हित आये ❀ आपन धरम गमायोआय।
मार कठिन है पथरीगढ़ की ❀ लड़िहैंसमर कालिकामाय॥
देश पहाड़ी कोसों पत्थर ❀ तम्बुअन मेख गड़ेगी नाय।
जावो भाग यहां से देवर ❀ अपनीलेजाव जानबचाय॥
अब तक भौजी रही तुम्हारी ❀ अब हो गई पराई नार।
अपने भइया से जा कहियो ❀ देंदुखियाकाख्यालबिसार॥
कहना प्यार जाय बेटा से ❀ देना सासुल को समझाय।
कही न मानी जैसी हमने ❀ तैसी मूड़ बिसानी आय॥
एक जनम की कौन चलावे ❀ छूटा सात जलम को साथ।
कठिन मवासी पथरीगढ़ है ❀ मछला लगे नहीं अबहाथ॥
तब ललकारो बघ ऊदल ने ❀ क्या तू भौजी रही बताय।

क़िला लौटि दें पथरीगढ़ का ❋ गदहन हल देवें चलवाय ॥
लौटिकेगंगापश्चिमबहिजायं ❋ राजा बासुक तजैं पताल ।
दंड बांध लूं ज्वालासिंह की ❋ तब मैं देशराज का लाल ॥
इंदल बेटा को मैं ब्याहूँ ❋ भौजी सुवापंखिनी साथ ।
मन की बातें हैं मन ही में ❋ तुमसे कहूँ जोड़कर हाथ ॥
तादम मछला बोलन लागी ❋ देवर सुनो उदयसिंह राय ।
जीतन चाहो जो पथरीगढ़ ❋ गुरूको लानासाथ लिवाय॥
देवी चंडी की मठिया में ❋ करना इन्दल का बलिदान ।
मोह भतीजे का करियो ना ❋ देवर कही लीजिये मान ॥
हमहूँ बालम कायम रैहैं ❋ होइ हैं बहुत इन्दलसी राय ।
बात गये फिर मिलिहै नाहीं ❋ चाहे लाखों करो उपाय ॥
बिन बलि दीन्हें माने नाहीं ❋ भूखी बैठि कालिका माय ।
परवश बैठी मछला भौजी ❋ देबी चंडी बुरी बलाय ॥
अब तुम चले जाव महलों से ❋ देवर मया मोह बिसराय ।
चरन लागिके भौजाई के ❋ ऊदल चला कूच करवाय ॥

## ऊदल का सैयद के पास जाना चेला होना

लागी धूनी जहं सैयद की ❋ पहुँचा जाय उदयसिंह राय ।
झोला फेंक दिया धूनी में ❋ चूड़ियां टूक टूक हो जांय ॥
हाथ जोड़ सैयद से बोला ❋ बाबा चेला लेव बनाय ।
चोटी मूड़ देव गुरु दिक्षा ❋ तूंबा हाथ देव पकराय ॥
फंसकर दुनिया के झंझट में ❋ आधी दीन्हीं उमर बिताय ।
नहिं सुख पाया नर देही का ❋ आगे करिबे कौन उपाय ॥
हुकुम चलाना तुम धूनी पर ❋ चेला मंगिहै भीक तुम्हार ।
बरजें लड़िका सब सेठन के ❋ जोगी मती बनो मनिहार ॥

रूपया पैसा ले लो हमसे ❀ खोलो मण्डी में दूकान।
संगत करिये न मुड़िया की ❀ लीजे कही हमारी मान॥
बोला ऊदल तब सेठों से ❀ अबना फंसब मोह के जाल।
चेला हुइहैं इस जोगी के ❀ तुमसे सही बतावें हाल॥
हाथ पकड़ि के बघ ऊदल का ❀ कहने लगा तलंसी राय।
कोई तीरथ यहाँ न बेटा ❀ कैसे चेला लेंय बनाय॥
मूड़ैं चोटी नीमसार में ❀ जहं पर तीन कोटि देवतान।
अमरकंटिका बिरवा जहं ❀ अपने हाथ धरा भगवान॥
बनी रसोइयां तहं सीता की ❀ राजाराम किया जेवनार।
बृक्ष बिराजे नीमसार में ❀ जेहिकीअलंगबिलंगगईडार॥
उसी बृक्ष के नीचे मूड़ैं ❀ फूंकें मंत्र तुम्हारे कान।
समझ इशारा तब सैयदका ❀ चलिभा उदयसिंह बलवान॥
चारि घड़ी औ सवा पहर में ❀ पहुँचे उसी बाग दरम्यान।
जौने कारन पथरी आये ❀ कारनसिद्ध किया भगवान॥
थके राह के बहु ऊदल थे ❀ सैयद आसन दिया बिछाय।
एक बृक्ष के नीचे दोनों ❀ सोये तुरत पैर फैलाय॥

## चंडी देवी का ज्वालासिंह को खबर करना

चण्डी देवी पथरी वाली ❀ ज्वालासिंह से कहे सुनाय।
योगी बनिके ताल्ह सैयद ❀ पथरीअलखजगायो आय॥
बनि मनिहारा ऊदल आया ❀ महलन आया चूड़ीपिन्हाय।
भेद भाव सब लिया महल का ❀ आया मछला से बतलाय॥
अक्कल तिहारी पत्थर पड़िगे ❀ जलसिंहतेरा बुरा होयजाय।
कछु नहिं जाने तूने पाया ❀ दुस्मन नगर गये पंजियाय॥
अब भी सोते दोउ बाग में ❀ जाकर दण्ड लेव बंधवाय।

सुनिके बातैं ये चण्डी की ❀ जलसिंहगयासनाका खाय॥
बांधि सिरोही राजा चलिभा ❀ संग बारा सौ ज्वान लिवाय।
सैयद ऊदल दोनों सोवैं ❀ जलसिंहलीन्हांबागघिराय॥
फ़ालिम बोल दिया बागों में ❀ अब नहिं राखो देर लगाय।
जहां पै सोवैं सैयद ऊदल ❀ पहुँचे तहां शूरमा जाय॥
पकड़ो मारो जान न पावैं ❀ चौतरफा से पड़ी पुकार।
पैग २ पर पैदल लग गये ❀ दुइ २ खेत लगे असवार॥
जैसे लोहे पर घन बाजे ❀ जैसे जेवर गढ़े सुनार।
आंख खोल सैयद जब देखा ❀ चहुँदिश बरसरही तलवार॥
बहुत बचाया ताला सैयद ❀ तब भी घाव भये दो चार।
बहने खून लगा ज़ख्मों से ❀ कसकैं घाव तलसी क्यार॥
निद्रा देवी की गोदी में ❀ सोवत पड़ा उदयसिंह राय।
खबर नहीं है बिल्कुल जाको ❀ ऐसी लीन्हीं नींद दबाय॥
ऊदल २ को ललकारे ❀ सैयद उछलि २ रहि जाय।
तबहूँ कलहा महुबे वाला ❀ जागा नहीं उदयसिंह राय॥
खींच तमाचा सैयद मारो ❀ दुश्मन डारो मोहिं मराय।
घुड़की भारी दी ऊदल को ❀ क्या जम रहेभुजनपरछाय॥
सुख की निदिया तू सोये है ❀ बैरी चढ़ा शीश पर आय।
नाम लेत खन वा बैरी को ❀ तड़प के उठा उदयसिंहराय॥
औंधी नींदन उठि ठाढ़ो भयो ❀ आंखिन रहो मोर सो छाय।
आँख खोल जब ऊदल देखा ❀ घायल सैयद पड़ा दिखाय॥
सुरखी छाय गई आँखों में ❀ गुस्सा भरा बदन में जाय।
जहां पे हाथी ज्वालासिंहका ❀ ऊदल गिरा बाजसम जाय॥
सूंड़ि पकड़ि के अबहाथीकी ❀ औ चकई सम दियो घुमाय।
ठाढ़े पटक दिया हाथी को ❀ हौदा चूर २ होय जाय॥

लात मारिके ज्वालासिंह के ❀ ऊदल छीन लई तलवार ।
बोला ऊदल फिर सैयद से ❀ चाचा हो जावो हुशियार ॥
इतनी सुनके बनरस वाला ❀ लीन्हों बांधि आपने घाय ।
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे ❀ जैसे सिंह बिड़ारे गाय ॥
ऊदल सैयद की मारुन में ❀ उखड़े पैर शूरमन स्यार ।
लाश पै लाश गिरी बागोंमें ❀ बहने लगी खून की धार ॥
सवा पहर भर तेगा बाजो ❀ लोथिन ऊपर लोथ दिखाय ।
बारह सौ में एक तिहाई ❀ ऊदन लश्कर दिया गिराय ॥
देखि लड़ाई बघ ऊदल की ❀ कोई शूर न रोपै पाँय ।
बहुतक ज्वान मरे बागों में ❀ बहुतक भागे पीठ दिखाय ॥
बहुतसे जोधा जख्मी होगये ❀ सब दल तिड़ीबिड़ी हो जाय ।
मुरछा छोड़दिया ज्वालासिंह ❀ तब देबी ने कहा सुनाय ॥
हमने रोका तुमको पहिले ❀ लावो मती मछलदे नार ।
अभी तो ऊदल इकले आया ❀ पथरी दीन्हां जुलुम गुजार॥
जादिन आवे सिरसा वाला ❀ पथरी खोदि करावै ताल ।
सुनिके बानी यह चन्डी की ❀ डरिगयो भूरीसिंहकोलाल॥
सनन बनन कानन में होवै ❀ धक्का लगा कलेजे माय ।
गैल गुटइयाँ बैरिन हो गईं ❀ जिन पे राह चली ना जाय॥
ऊदल सैयद चलि बागों से ❀ पहुँचे नगर महोबे जाय ।
कहा माजरा पथरीगढ़ का ❀ सैयद आल्हा से समझाय ॥
दोनों आँखों में आंसू भर ❀ बोले आल्हा गिरा उचार ।
नामी राजा पथरीगढ़ का ❀ जाकी बड़ी कड़ी है मार ॥
तब ललकारो बघ ऊदल ने ❀ भैया तेरा बुरा हो जाय ।
तुम्हें हँसौवा का डर नाहीं ❀ बहंको बातैं रहे सुनाय ॥
मछला भाभी के बदले में ❀ पथरी शहर देंय फुँकवाय ।

खबर भेजकर चोर बौनिया ❋ तुम कुड़हर से लेव बुलाय ॥
ऊदन नाहर की बातैं सुनि ❋ सैयद के मन गईं समाय।
चोर बौनिया को फिर तुरतै ❋ ऊदनचिट्ठी लिखीबनाय॥

## ऊदल का बौना चोर को बुलाना

मार साड़िया धावन चलिभा ❋ पहुँचा गढ़ कुड़हरि में जाय।
जहां पै बैठा चोर बौनिया ❋ कासिद चिट्ठी दई गहाय ॥
नगर महोबे का परवाना ❋ बौनो पढ़ा खूब मन लाय।
जौन बात को हम चाहत थे ❋ ईश्वर रोजी दिया लगाय ॥
करी तयारी गढ़ महुबे की ❋ बौना सड़िनी भया सवार।
मंजिल तयकरि बौना पहुँचा ❋ जहँ दरबार महोबे क्यार ॥
जहाँ बनाफर मण्डरीक थे ❋ बौना बोला बचन सुनाय।
कौने कारण मोहिं बुलवाया ❋ ओ महराज बनाफर राय॥
खातिरदारी करि बौना की ❋ ऊदल बोला पास बिठाय।
मौजी मछला को ज्वालासिह ❋ पथरीगढ़ ले गया चुराय ॥
बात बिगड़िगै बनाफलों की ❋ इज्जत मिलीखाकमेंजाय।
बड़ा भरोसा बौना तेरा ❋ अब सँकरे में होउ सहाय ॥
क्वांरी बेटी ज्वालासिंह की ❋ जाको सुवापंखिनी नाम।
रंग चढ़ा दो जो क्वाँरी पर ❋ तो बनि जाय हमारो काम॥
हो मशहूर बहुत तुम डाकू ❋ ठाकुर कुड़हर के सरदार।
इन्दल बेटा की शादी हम ❋ करिबे जलसिंह के दरबार॥
इतना काम करो जो बौना ❋ दो क्वाँरी के रंग चढ़ाय।
हाथ जोड़ बौना तब बोला ❋ हमसे होय काम यह नाय॥
दुनिया देखी हम मतलब की ❋ कोई नहीं किसी को यार।
चोरी होगई जब रानी की ❋ तब बौना की हुई पुकार॥

जोते बिसुना ना महुबे का ❋ खाते दिया तुम्हारा नाय।
काज तुम्हारे पथरीगढ़ में ❋ नाहक प्राण गंवावें जाय॥
लूट माफ़ तुम पथरीगढ़ की ❋ जो लिख देव उदयसिंह राय।
करदें दसखत आल्हा ठाकुर ❋ तो हम आवें रङ्ग चढ़ाय॥
लूट माफ़ पथरी की लिखदी ❋ आल्हा दसखत दिये बनाय।
लिखा पत्री आल्हा जब करदी ❋ भा मन खुशी बौनिया राय॥
बोलन लागो तब आल्हा से ❋ सब सामान देव मंगवाय।
मुश्किल काम नहीं यह कोई ❋ अबहीं आवें रङ्ग चढ़ाय॥
लेकर डब्बा गहने वाला ❋ दीन्हों आय उदयसिंहराय।
बक्स दिया है कपड़े वाला ❋ सेंदुर सुरमा दिया मंगाय॥
कंघा शीशा रोली मेंहदी ❋ हरदी धरदी तुरत पिसाय।
सब सामान बांधि बौना ने ❋ अपनो खंता लिया उठाय॥
कैंची चाकू ओर हथौड़ी ❋ बटुवा लिया गले में डार।
खूंटी लीन्हीं ईसपात की ❋ पत्थर छेदि जो होवे पार॥
जितना बाना है चोरी का ❋ लेकर कुड़हर का सरदार।
करी तयारी पथरीगढ़ की ❋ सबसे करके राम जुहार॥
कूच बोलि महुबे से दीन्हां ❋ मारग सगुन पड़े दिखलाय।
बायें हाथ से तीतर बोले ❋ सारस बोलि दाहिने जाय॥

## बौना चोर का मकला के पास जाना

समुहे चन्दा है बौना के ❋ पीछे खड़ी जोगिनी आय।
सगुन हमारो झूठ न पड़िहै ❋ तेरा भले झूठ पड़ जाय॥
बौना पहुँचा पथरीगढ़ में ❋ तब अपनेमन किया विचार।
बिना भेद के होय न चोरी ❋ कैसे करिहैं काम तुम्हार॥
भेष बदल तब बौना डारो ❋ ली बनिया की शकल बनाय।
पाग लपेटा शिर में बांधो ❋ रामानन्दी तिलक लगाय॥

पहिन अंगरखा बौना तुरतै ❋ लीन्हां गले दुपट्टा डार ।
पहिन के जूता माड़वार का ❋ बौना बनि गया साहूकार ॥
लेकर थैली रुपयों वाली ❋ घूमन लागो चौक बज़ार ।
कीन्हां बौना पथरीगढ़ में ❋ सोने चाँदी का रुज़गार ॥
जवाहरात के माल खरीदे ❋ बेंचे उसे मुनाफ़ा पाय ।
आठ रोज़ पथरी में हो गये ❋ घूमत फिरै बौनिया राय ॥
गली २ औ कूचा २ ❋ लीन्हां बौना सभी निहार ।
महल निहारा ज्वालासिंह का ❋ जामें रहे मछलदे नार ॥
भरभादौंकी झुकी अंधेरिया ❋ चहुँ दिश सूझ पड़े अंधियार ।
कौंधा लपके बिजली तड़पे ❋ पानी बरसे मुसलाधार ॥
भागि सन्तरी गये पहरे से ❋ भा मन खुशी बौनिया राय ।
मौका आज पड़ा चोरी का ❋ ऐसे में हम चूकैं नाय ॥
भेष किया चोरों का बौना ❋ सिगरी चीजैं लिया उठाय ।
नज़र बचाकर सबकी बौना ❋ महलों तले पहूँचा जाय ॥
मछला रानी के महलों की ❋ बौना कुण्डी रहा हिलाय ।
पड़ती नींद नहीं मछला को ❋ हरदम फ़िकर रहे मन माय ॥
जभी किंवारे बौना झेले ❋ तब मछला ने कहा सुनाय ।
बड़ा अनोखा तू आशिक़ है ❋ औ मस्ती ने लिया दबाय ॥
करिके कौल अगर तू पलटे ❋ जलसिंह पड़े नरक में जाय ।
कुल्टा नारी हम नाहीं हैं ❋ जो तू लेय मुझे फुसलाय ॥
ऐसा तुझे सरापूं जलसिंह ❋ काया तेरी भस्म हो जाय ।
पतिब्रता जो चाहे मन में ❋ पल में परलय देय मचाय ॥
धीरे २ बौना बोले ❋ रानी सुनो महोबे क्यार ।
हम नहिं राजा पथरीगढ़ के ❋ माता बौना नाम हमार ॥
तुमहित बांधि महलमें आयो ❋ माता खोलौ बज्रुर किंवार ।

बोल चीन्ह बौना का मछला ❀ सांकर खोल दियो झटनार ॥
सूरत देखी जब बौना की ❀ तब मछला ने कही सुनाय ।
जाओ भागि अभी महलोंसे ❀ क्या जम चढ़े भुजोंपरआय ॥
पता जो पावेगा ज्वालासिंह ❀ तेरी क़ैद लेय करवाय ।
मेरे पीछे बौना अपनी ❀ यहां पे देहौ जान गंवाय ॥
छूकर पैर दोऊ मछला के ❀ कहने लगा बौनिया रोय ।
क्यों घबड़ावे रानी मन में ❀ हमको खौफ़ ज़रा भी नाय ॥
नमक तुम्हारा खायो माता ❀ सो काया में गयो समाय ।
पेशा मेरा है चोरी का ❀ हमको पकड़ न कोई पाय ॥
खोलिके डिब्बाजेवर वाला ❀ सो मछला को दियो दिखाय ।
कौन महल में सुवापंखिनी ❀ सो मोहिं माता देव बताय ॥
यह रङ्ग लाये हम महुवे का ❀ उस क्वांरी को देंय चढ़ाय ।
कमती होवै जिन चीजों की ❀ मुझसे जल्द देव बतलाय ॥
काम न मेरा रङ्ग चढ़ाना ❀ पर क्या करूं बात मजबूर ।
जो कुछहुकुमदियाऊदलने ❀ मुझको करना पड़े ज़रूर ॥
सुनिके बातें ये बौना की ❀ मछला फूली नहीं समाय ।
अबहम जानो अपनेमनमें ❀ बौना लेहौ मोहिं छुड़ाय ॥
चौकस रहना शीशमहलमें ❀ पावैं खबर न पहरेदार ।
जहां पै सोवे सुवापंखिनी ❀ बांदी रहें हमेशा चार ॥
ऊंचे बुर्ज बने महलों के ❀ कैसे चढ़े वहां पर जाय ।
रङ्ग चढ़ाना मुश्किल बौना ❀ तेरी जान बचैगी नाय ॥
तब ललकार कही बौना ने ❀ अपनी खींच तुरत तलवार ।
बैठे भजन करो महलों में ❀ तुमतो मंडरीक की नार ॥
देखोअजमतिअबबौनाकी ❀ अबहीं आऊँ रङ्ग चढ़ाय ।
इतनाकहिके रनिमछला से ❀ तुरतै चला बौनिया राय ॥
सब सामान बांधि कंधे में ❀ पहुँचा महल रेखता क्यार ।

चारो बुरजों को जब देखा ❀ हिम्मत गयो बौनिया हार ॥
निहुरे २ गवनत आवे ❀ पहुँचा खास क़िले के पास ।
अथलअखंडअगमगढ़गिरवर ❀ रिवनी करत स्वर्ग में बास॥
क़िला कोट फाटक के ऊपर ❀ उड़ि रहे सुनों कबूतर काग ।
भर निगाह ऊपर को चितवे ❀ तो गिर जायशीशकीपाग॥
चार द्वार गढ़ के हैं भारी ❀ जिनमें लागे बज्र किंवार ।
लगे चमुरखाहैं खिड़किन में ❀ जिनमें दशो दिशन की मार॥
पुर रखवारे जहं तहं डोलैं ❀ भाला नागदौन का हाथ ।
पनियां सोत बहें खंदक में ❀ जामें मगर हिलोरा खात ॥
जोकोइजनगढ़ चढ़केनिरखे ❀ ताको सूझ परे आकाश ।
बनेविचित्र बुर्ज अतिसुन्दर ❀ है मरयाद अठारह बांस ॥
नीचे नज़र पड़े खन्दक में ❀ पड़ता देख सुनों पाताल ।
महल निराला है शीशे का ❀ जामें पड़े नगीना लाल ॥
धरते पांव रपट तहं जावे ❀ बौना सोचि २ रहि जाय ।
देश २ हम चोरी कीन्हीं ❀ ऐसी जगह मिली कहिंनाय॥
बिना कामकरिमहुबे जावैं ❀ पावैं दुःख बनाफर राय ।
सुमिरके देवी कुड़हरिवाली ❀ गोह को रस्सी दई पकराय ॥
ऊपर फेंकि गोह को दीन्हां ❀ चढ़िगे गोह महल में जाय ।
चारो पंजे गोह आपने ❀ खिड़की ऊपर दिया टिकाय ॥
लेकर खूँटी ईशपात की ❀ बौना लई हथोड़ी हाथ ।
एक हाथ से रस्सा पकड़ो ❀ लागो चढ़न लगाकर लात ॥
चोरहै शातिरकुड़हरि वाला ❀ खूंटीगाड़ि महल चढ़िजाय ।
बदनसमेट राह खिड़की की ❀ पहुँचा महल बौनिया राय ॥
जाकर चिपक गया खम्भे में ❀ जैसे छिपकी रहे छिपाय ।
जागे बेटी ज्वालासिंह की ❀ घर बांदिन से रही बताय ॥

## सुवापंखिनी की बातचीत

झंप रहीं आंखैं बांदी मेरी ❀ आधी रैन पहूँची आय।
अब हम सोती हैं महलों में ❀ हमकोनिदिया रही सताय॥
रानी मछला को महुबे से ❀ लाये जब से पिता हमार।
तब से खटका भारी हमको ❀ बाँदी खूब रह्यो होशियार॥
डाकू बौना कुड़हरि वाला ❀ करता काम महोबे क्यार।
बेशक भेजैंगे पथरी गढ़ ❀ आल्हा मण्डरीक औतार॥
चोरी करने में शातिर है ❀ जाको नाम बौनिया राय।
धोखा खाना मत पहरे से ❀ नहिं कहुँ बौना पहुँचे आय॥
आ जाय डाकू जो महलों में ❀ तो सब जावें काम नसाय।
सात पुश्त को धब्बा लागै ❀ छूटै दाग़ उमर भर नाय॥
हाथ जोड़ तब बांदी बोली ❀ बेटी करो नहीं परवाय।
बेखटके पलंगा पर सोवो ❀ गलती करैं जरा भी नाय॥
आता देखैं जब बौना को ❀ मारैं तुरतै ईंट चलाय।
सुनता बौना सब बातों को ❀ जो कुछ बाँदी रहीं बताय॥
ओढ़ के चादर सुवापंखिनी ❀ लागी करन तुरत सोउनार।
चारो बंदिया चारो मचवन ❀ हो गईं पहरे मा हुशियार॥
सोचे बौना मन में अपने ❀ मुश्किल बात पड़े दिखलाय।
कौन जतन से इन बांदिनको ❀ ग़ाफ़िल करूं महल के माय॥
काज बनाफर के हम आये ❀ देवता सुनो महोबे क्यार।
रंग चढ़ाने को आया हूँ ❀ दीजो सारा काम संवार॥
सुमिर जालिपा कुड़हरवाली ❀ बौना दीन्हां डारि मसान।
पलकेंमुंदगईं सब बांदिन की ❀ विषधर महलन केमैदान॥
जहां पै सोवे सुवापंखिनी ❀ बौना खड़ा हुआ तहं जाय।
सोते पाया सबको बौना ❀ दिये महलनके दिया बुताय॥

चादर लौटि दियाक्वांरी की ❀ कौंधा भया सामने आय।
सूरत देखी जब कामिनकी ❀ बौनाखुशी हुआ मन माय॥

## बौना का सुवापंखिनी के रंग चढ़ाना

खोल पिटारी गहने वाली ❀ मन में अमरगुरू को ध्याय।
पैर महावर हाथन मेंहदी ❀ बौना रचि २ दई लगाय॥
कोमल बदन उमर की बारी ❀ गोरो गात कामिनी क्यार।
अतर गुलाबन की शीशी ले ❀ दीन्हीं तुरत शीश में डार॥
बाल संवार बाँध चोटी को ❀ दई सेंदुर से मांग भराय।
सुरमा आंजि दिया आंखोंमें ❀ दांतनमिसिया दियालगाय॥
खोलिके डिबिया रोरी वाली ❀ दोउ भौंहन बिच दई लगाय।
शीशा कंघा धरि सिरहाने ❀ सुरमेदानी रखी छिपाय॥
हरे पाट की चोली लैके ❀ दीन्हीं क्वारी को पहिनाय।
बिंदिया धर दी है माथे पर ❀ मुख में दीन्हां पान खवाय॥
चीर दक्खिनी को पहिनाया ❀ सिर में चूनर लाल ओढ़ाय।
छहो अंगुरियनमेंछैबिछिया ❀ अँगुठा अंगुष्ठानपहिराय॥
बांधि बजुला भुजदंडन में ❀ कानन करनफूल छबिदार।
हंसुली डारि दिया गर्दन में ❀ दीन्हों नाक नथुनियाडार॥
कड़ा के ऊपर छड़ा डार दिये ❀ नीचे पायजेब की मार।
मोहन माला हार निराला ❀ डारो गले नौलखा हार॥
बड़ी सिफ़त से बौना डाकू ❀ जोरा हाथ दिया पहिनाय।
कमर करधनी धरि सोने की ❀ जड़े सितारे भौंहन माय॥
मेवा सारी और मिठाई ❀ पलंगा धरे फूल औ पान।
पलंग साजि बौना ने दीन्हां ❀ जैसे बनिया सजे दुकान॥
क्वारी बेटी को बौना ने ❀ जब सब दीन्हों रंग चढ़ाय।
लेकर छोर तुरत चूनर को ❀ लिखने लगा बौनिया राय॥

लगा पलीता ज्वालासिंह के ❋ सुनकर बचन मल्हारे क्यार।
तोप दरोगा को ललकारा ❋ बत्ती देव तोप में डार ॥
दोनों दलमें हुकुम है जारी ❋ तोपन आग दई लगवाय।
पड़े दनाका हैं गोलन कें ❋ धनुवा रहा सरग में छाय ॥
बाढ़ि सिरोही की चमकत है ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार।
भांग उतरि गई भंगेड़िन की ❋ गाँजा वाले पड़े पिछार ॥
तेग़ा बैठे जब खोपड़ी में ❋ तब पटखुले अफ़ीमनक्यार।
नशाचरसकोगूंगापड़िगयो ❋ भाला चमकत शीश मंझार॥
दशा भयानक भई समर की ❋ औ बहि चली खून की धार।
ढेबा ऊदन की मारुन में ❋ हिलगे पाँव नरेशन क्यार ॥
खाय शिकस्ता गये पथरीके ❋ भागे डारि २ हथियार।
बीर मल्हारे सिरसा वाले ❋ नंगी हाथ गहे तलवार ॥
समुहें घोड़ी मलखे ले गये ❋ बोले जलसिंह से ललकार।
मज़ा चखावैं बदमाशी का ❋ अब ना छोड़ैं प्राण तुम्हार ॥
सुनिके बातें मलखाने की ❋ क्षत्री गयो तुरत रिसियाय।
भरि बंदूक़झोंकदईजलसिंह ❋ घोड़ी साठि बांस उड़ि जाय॥

## मलखान का ज्वालासिंह को भगाना

दे थिरकैंया फिरी कबुतरी ❋ मलखे खींच लई तलवार।
कसिके मारी ज्वालासिंह के ❋ मनिया सुमिर महोबे क्यार॥
सात पेंच चीरे के कटिगै ❋ जौ भर माथे गये समाय।
जान हमारी न बचने की ❋ ज्वालासिंह गया घबड़ाय ॥
लेकर हाथी रण से भागे ❋ दाखिल भये क़िले में जाय।
फाटक बंद क़िले का करिके ❋ अहदू कुलुफ़ दिये डरवाय ॥
लेकर सैना मलखे पहुँचा ❋ डारो फाटक को टुरवाय।
बौना डाकू शहर में घुसिगा ❋ माल खज़ाना लिया लुटाय॥

सुवाराम औ हाथीराम जू ❀ दोनों बंधिगे तनय तुम्हार ॥
सांय पैठिगे ज्वालासिंह के ❀ चोला हुआ हाल बेहाल ।
मार मसोसा राजा रहिगे ❀ घूंटी जाय न पेटे राल ॥
हुकम फेरि लश्कर में दीन्हां ❀ फ़ौजें जल्द होंय तैयार ।
देर करन का मौक़ा नाहीं ❀ होती घड़ी २ पै वार ॥
आज्ञा दीन्हीं पीलवान को ❀ हाथी साजि करो तैयार ।
ले हनवायो झिरना जल में ❀ ऊपर दियो दुशाला डार ॥
धरि अम्बारी पीठमें दीन्हां ❀ लहकतकलश सूबरनक्यार ।
लालरतनपुखराजऔनीलम ❀ होदा मणी करैं उजियार ॥
करि स्नान भजन औ भोजन ❀ भूषणपहिरके जलसिंहराय ।
छुरी कटारी बगुदा बिछुवा ❀ लोहो अङ्ग लिया लपटाय ॥
तेग़ तमंचा भाला बरछी ❀ कर लये शूरन का सिंगार ।
ज्वालासिंह हाथी पै बैठे ❀ झूमत कम्मर में तलवार ॥
डबल अलारम बजा फ़ौज में ❀ लश्कर कूच दिया करवाय ।
घड़ी चार का अरसा गुजरा ❀ जलसिंह गया समरमें आय ॥
एक मील का टप्पा दैके ❀ मुर्चाबन्दी दई लगाय ।
गोलन्दाज त्यार अब ठाढ़े ❀ प्यालिन रंजक धरी जमाय ॥
अबगजबढ़िगाज्वालासिंहका ❀ मानो सिंह अनी को जाय ।
श्यामसिंह औ भैरोंसिंह की ❀ जलसिंह लई लाश उठवाय ॥
सो धरवाय तुरत पीनस में ❀ पथरीगढ़ को दिया पठाय ।
ठाढ़े होकर अम्बारी में ❀ ज्वालासिंह ने कहा सुनाय ॥
कौन है आल्हा महुबे वाला ❀ सनमुख आवैं नज़र हमार ।
करके क़ैद आज हम उसको ❀ सोवैं सेज मछलदे क्यार ॥
पाग पैंजनी सिर में बांधे ❀ घोड़ी रेल दई मलखान ।
सम्हर जा पाजी तू होदा में ❀ अब न बचिहैं तेरे परान ॥

# सुवाराम व जोगा भोगा की लड़ाई

ताके मोहरे पर आ पहुँचे ❋ दोनों स्यानमती के भाय।
किसने बाँधो है भैया को ❋ सुवाराम ने कहा सुनाय॥
जोगा भोगा सुवाराम को ❋ भारी जबर दई ललकार।
मजा चखावैं बदमाशी का ❋ अबना छोड़ूं प्राण तुम्हार॥
जोगा भोगा की बातैं सुनि ❋ खींची सुवाराम तलवार।
ताक के मारो है जोगा के ❋ लेकर नाम महादेव क्यार॥
लगी सिरोही भुजामें जाकर ❋ दो अंगुल तक गई समाय।
छुटा फुहारा जब लोहू का ❋ जोगा बहुत गया घबड़ाय॥
लेकर हाथी जोगा भागो ❋ पीछे फेरि निहारो नाय।
हटिगा जोगा जब मुरचे से ❋ भोगा बोला बचन रिसाय॥
घायल कीन्हां तू भैया को ❋ अपनी कुशल समझना नाय।
सुनिके बातैं ये भोगा की ❋ सुवाराम ली गुर्ज उठाय॥
घुटुवन हुइके अम्बारी में ❋ दीन्हों भोगा पै फटकार।
भोगा छिप गये अम्बारी में ❋ नीचे गिरा जाय हथियार॥
मन खिसियाने भोगा ठाकुर ❋ झड़का कियो मगरबी क्यार।
ढालकी औझड़ इनिके मारी ❋ गिरिगे सुवाराम सरदार॥
घड़ी एक को मुर्छा आ गई ❋ भोगा दण्ड लिया बंधवाय।
फ़ौजैं भागीं पथरीगढ़ की ❋ बौना लूट लिया करवाय॥

# ज्वालासिंह का समरभूमि में आना

जहां कचेहरी ज्वालासिंह की ❋ धावन खबर लगाई जाय।
खेत तुम्हारा डगमग हुइगा ❋ पाई विजय बनाफर राय॥
श्यामसिंह भैरोंसिंह जूझे ❋ सहि न सके समर का भार।

रुद्राक्ष की माला पहिनी ❀ मनो तप कीन्हों बरसहजार।
हाथ कमंडल सैयद लीन्हां ❀ भसमी लीन्हां अंग लगाय॥
मुद्रा डारि लिये कानों में ❀ झोला खप्पर लियो उठाय।
बटुआ लीन्हों अजमतवालो ❀ बाइस पर्त गुदरिया क्यार॥
सत्य मित्रता है लोहा से ❀ जामें छिपी ढाल तलवार॥
एक तो भारी डील डौल का ❀ कंजी आंखों का सरदार।
तीजे बाना बैरागी का ❀ चौथे रूप दिया करतार॥
सजकर सैयद ठाढ़ो हो गयो ❀ सजने लगा उदयसिंह राय।
ब ख्तर ऊपर जामा पहिनो ❀ फिर पैजामा लियो चढ़ाय॥
पाग लपेटा सिर में बांधा ❀ कानन कुण्डल लीन्हें डार।
अमृतसर का जूता पहिना ❀ पंचा लाल लहाउर क्यार॥
लेकर झोला दांव पेंच का ❀ तेगा उसमें धरा छिपाय।
मारू अचकन जरीपोश की ❀ तामें लीन्हीं बेल टंकाय॥
तरह २ की चूड़ी लीन्हीं ❀ सोंटा लिया हाथ रंगदार।
झोला टांग लिया कंधे पर ❀ जो रणशूर महोबे क्यार॥
सबसे मिलकर ऊदल सैयद ❀ तुरतै चले कूच करवाय।
एक रातऔ दिनभरचलकर ❀ पहुँचे पथरीगढ़ में जाय॥
जहां चमन था ज्वालासिंह ❀ सैयद बोला बचन सुनाय।
चार रोज तुम चुपके रहना ❀ बेटा मेरे उदयसिंह राय॥
गाली देवै जो कोई तुमको ❀ उसको बुरा मानियो नाय।
पहिली गारी हम सहि लेबे ❀ दुसरी चुप्पसाधि रहि जाय॥
तीजी गारी पर ना छोड़ ❀ मुंह में ठांसि देब तलवार।
सुनिके बातैं बघऊदल की ❀ बोला बनरस का सरदार॥
तुम तो बेटा रहो बाग में ❀ पहिले हम पथरी को जांय।
ऊदन नाहर को समझाकर ❀ पथरी चला तलन्सी राय॥

# सैयद का पथरीगढ़ में अलख जगाना।

घड़ी एक मारग में बीती ❀ सैयद पथरी पहुँचा जाय।
सुन्दर शहर बना पथरीगढ़ ❀ उपमा काह कहें हम गाय॥
कङ्कर पत्थर की सड़कें हैं ❀ पथरी शहर बना गुलजार।
छाल दिवारी औ तिदवारी ❀ ठाढ़े महल रेखता क्यार॥
धर्म सनातन बने शिवाले ❀ हिन्दू लोग करैं विश्राम।
बनी सरायें भटियारन की ❀ जपते मियाँ खुदा के नाम॥
पहुँच के सैयद पथरीगढ़ में ❀ घर २ अलख जगाई जाय।
बीन बंसुरिया पकड़ हाथ में ❀ फूंकन लगो तलंसी राय॥
बाजत बीन चैन की बंशी ❀ सब नरनारि बिकल हो जायं॥
हाट बजार गली औ कूचा ❀ गावैं भजन तलंसी राय॥
सौदा देत भूल गये बनिया ❀ गुड़ के धोके तौलें दार।
तौलन वाले तौल भूल गये ❀ कपड़ा वारे दून गये फार॥
लिखने वाले लिखना भूले ❀ नक़दी लिखग येक़लमउधार।
मड़े चून तिरियन ने छोड़े ❀ मरदन तजे परूसे थार॥
नर औ नारि सकल पथरीके ❀ मुख योगी का रहे निहार।
दाबिअंगुरियांतिरियांरहगईं ❀ बहंजू धरे किंवारों क्यार॥
गौने वाली मौनी हो गईं ❀ ब्याही लरजि २ रहिजांय।
ध्यान छूटि गये पतिब्रतनके ❀ क्वांरी गणपति रहीं मनाय॥
कहती तिरियाँ हैं आपस में ❀ योगी भेष महादेव क्यार।
सङ्ग नादिया जिसके नाहीं ❀ भैना सूरति पर बलिहार॥
ब्याही होती इस तपसी को ❀ तो नित घोंटि पिलातीभांग।
पैर धोय चरनामृत लेती ❀ धरतीरोज चिलमपरआग॥
होकरनिठुरसखी एक बोली ❀ गुइयाँ सुनलो बचन हमार।

तुम सबका पति जोगी होवे ❋ हम क्या गिरैं कुआं में जाय।
कोइ २ कामिन मनमें सोचैं ❋ घटिहा हो तुम कृष्ण मुरार।
ओछे कंथ मोय तुम दीन्हें ❋ ऐसा दिया नहीं भरतार ॥
कोइ २ नारी बढ़के बोलै ❋ अपने दोऊ जोड़कर हाथ ।
बैठे बाबा जङ्गल रहना ❋ सेवा करब दिना औ रात ॥
डारि मोहनी सैयद दीन्हीं ❋ सारी तिरियाँ गईं लुभाय ।
साठि बरसकी जो बुढ़िया थीं ❋ नौ ज्वानिन से कहा सुनाय॥
रसकी माती लाज न आती ❋ तुमको योवन लिया दबाय।
भई दिवानी तुम जोबन पर ❋ सारी अकल गई बौराय ॥
काम के बश में अन्धी डोले ❋ पड़ता देख आँख से नाय ।
चेहरा मोहरा बना भियावन ❋ गज भर छाती पड़े दिखाय॥
बह तो लड़िकाकेहुराजा का ❋ हाल में डारो मूड़ मुड़ाय ।
छलता फिरता है तिरियों को ❋ इसकी आँखबुरी दिखलाय॥
लेकर सोंटा हाथ में सैयद ❋ तुरतै कहा बचन ललकार ।
पचपन साला में सठियानी ❋ बुढ़ियाघटिगयोज्ञानतुम्हार॥
दोष लगाती है जोगी पर ❋ जनमकी पापिन पड़ै दिखाय।
बाप हमारे बारे मरिगे ❋ मैया मोरि रांड़ हुइ जाय ॥
पड़ी अविरियाजबमाता पर ❋ कोई रहा सहारा नाय ।
जोगिनहाथबेंचिमोहिंदीन्हां ❋ तब हम डारा मूड़ मुड़ाय ॥
सुनिके बातैं ये जोगी की ❋ बुढ़िया चली गई खिसियाय।
ऊचा कुआँ देख पथरी का ❋ जोगी धूनी दिया लगाय ॥
सबको मोह लिया बाबा ने ❋ तान रसीली मधुर सुनाय ।
सोरठ गावैं औ तिल्लाना ❋ जीव जन्तु सब गये लुभाय॥
लड़के बोलत हैं सेठन के ❋ बाबा हमें बना लो दास ।
चार महीना चौमासा भर ❋ स्वामी करो कुवाँ पर बास ॥

पहिलेनाम लिखागणपतिका ❋ पीछे लिखा लक्ष्मण राम।
सूर्य चन्द्रमा की छबि न्यारी ❋ लिखदओमहाबीरकानाम॥
लिखी शारदा मैहर वाली ❋ मनिया देव महोबे क्यार।
अमरगुरू की महिमा भारी ❋ राजा चन्द्रबंश सरदार॥
जिनके घर में पारस बटिया ❋ लोहा छुवत स्वान हुइ जाय।
नाम लिखाहै तुनिआल्हाका ❋ जिनकाकु वरइंदलसीराय॥
तेरी भांवर इन्दल संग में ❋ डारे सिरसा का मलखान।
देश देश के राजा उमड़ें ❋ जिनका नहिंहो सकेबयान॥
खरचा करिहैं ताला सैयद ❋ लड़िहैं समर उदयसिंहराय।
बांधिके मुश्कैं तेरे बाप की ❋ आल्हा पैर लेंय पुजवाय॥
आधे मड़वा भौंरी पड़िहैं ❋ आधे बजी विषम तलवार।
मान नरेशन के रैहैं ना ❋ ना रिस रहीक्षत्रियनक्यार॥
ये गति होगी पथरीगढ़ की ❋ मानो बसी भूमि पर नाय।
सासुल लिखदी मछलारानी ❋ छूना पैर सास के जाय॥
पक्का रंग चढ़ाया बौना ❋ उम्मर भर जो छूटे नाय।
तुमको जाना महुबे पड़िहै ❋ पीछे लिखा बौनिया राय॥
यहू काम से फुरसत पाई ❋ तब बौना ने किया विचार।
काह इनाम देंय बांदिन को ❋ करिहैं हँसी दुलारी क्यार॥

## बौना का बांदियों की शक्ल बदलना

देंय निशानी कुछ बांदिन को ❋ जासों करैं जनम भर याद।
मन में आई यह बौना के ❋ इनकी शक्ल करैं बरबाद॥
तवा ढूँढ़ि महलों से लाया ❋ उसमें दीन्हां तेल मिलाय।
तौन पोतिबांदिनमुख दीन्हाँ ❋ जिससे मुँहकालापड़िजाय॥
खोलिके बटुआ बौना डाकू ❋ तुरतकतरनीलियानिकाल।
जुलम गुजारे है बौना ने ❋ डारे कतर शीश के बाल॥
तौन छिपाय धरे झोली में ❋ महुबे पहुँचि दिखइहैं जाय।

शकलबिगाड़तुरतबांदिनकी ❋ बौना चला कूच करवाय ॥
रानी मछला के ढिग आकर ❋ सारा हाल कहा समझाय ।
डारि मसान मात महलन में ❋ दो दुलहिन के रंग चढ़ाय ॥
बाल काटि बांदिन के लीन्हें ❋ मुंहपर कोयलादियालगाय।
और कसर जो बाकी होवे ❋ रानी मोहिं देव बतलाय ॥
सुनिके बातें ये बौना की ❋ मछला कहाबचन मुस्काय।
है स्याबासी तेरी बौना ❋ कीन्हां कामअनोखा जाय॥
खैर आपनी जो तू चाहे ❋ जावै अभी यहाँ से भाग ।
खबरजो पावेगा ज्वालासिंह ❋ ज़िंदा तोहिं जलावे आग ॥
सारी रात खतम हो आई ❋ मत कर देर बौनिया राय ।
बात मानिके रनि मछलाकी ❋ बौना चला चरन शिर नाय॥

## सुवापंखिनी का हैरत में होना।

शहरके बाहरबौनाकढ़िगयो ❋ जागी सुवापंखिनी नार ।
खुलगईं आंखें जब बेटीकी ❋ तब अपने को रही निहार ॥
नये २ जेवर देखि बदन में ❋ गई बेटी की अकल भुलाय।
पढ़ी हक़ीक़त तब चुनरीकी ❋ मन में गई सनाका खाय ॥
उठी दुलारी ज्वालासिंह की ❋ हाथ में कोड़ा लिया उठाय।
पीटन लागी घर बाँदिन को ❋ दई देहीं की खाल उड़ाय ॥
गलती कीन्हीं बहु पहरे में ❋ हमने पहले दिया बताय ।
सुना है हल्ला जब मछला ने ❋ बाहर महल पहूँची आय ॥
खिड़की खोलि कहे क्वांरी से ❋ तुझको ज्वानी लिया दबाय।
अन्धी डोले तू जोबन में ❋ तेरी मती गई बौराय ॥
लेकर भोजन गई कुवां पर ❋ दर्शन करन डिगंबर क्यार।
क्यों नहिं मारो उस जोगीको ❋ जो था बनरस का सरदार॥
भरि २ बाहैं चूड़ी पहिनी ❋ तबनाशरम लगीतोहिंनार।
तुझे मारना था ऊदल को ❋ महलनआयोबनिमनिहार॥

मारो नाहीं उस बौना को ❀ जिसने आय किया सिङ्गार ।
नाहक मारति है बांदिन को ❀ इन क्याकीन्हींख़तातुम्हार॥
भई है दुरगतिइनदासिनकी ❀ कामिन सुनले तेरे पिछार ।
सुनिकै बातैं ये मछला की ❀ बांदिन छोड़ दई डिड़कार ॥
अब ना रहिबे पथरीगढ़ में ❀ बाहर भीक मांगिके खांय ।
काह बिगारा हमने बेटी ❀ कोड़न दीन्हीं खाल उड़ाय ॥
तेरे पीछे हमहूँ सो गई ❀ हमको ख़बर रही कछु नाय।
सुनो हक़ीक़त अब बौना की ❀ पहुँचा नगर महोबे जाय ॥
जहाँ पै बैठे आल्हा ऊदल ❀ बौनारहिगयो शीश झुकाय।
नज़र घूमिगे मण्डरीक की ❀ समुहें बौना पड़ा दिखाय ॥
हाल बताओ पथरीगढ़ का ❀ डाकू कुड़हर को सरदार ।
बोला बौना तब बंगला में ❀ सुनलो मंडरीक औतार ॥
रङ्ग चढ़ाया हम क्वांरी के ❀ लाये सिंगरे काम बनाय ।
बाल कतर बांदिन के लाये ❀ तुम लखि लेव बनाफर राय॥
उठिके आल्हा सिंहासन से ❀ लओ बौना को गले लगाय।
स्याबस डाकू कुड़हर वाले ❀ अच्छा आये रङ्ग चढ़ाय ॥
काटि जगीरैं दई बौना को ❀ आल्हा मण्डरीक औतार ।
माल खज़ाना इतना दीन्हां ❀ जिसका कोई नहीं शुमार ॥

## महोबे वालों की पथरीगढ़ पर चढ़ाई

स०-सुनि बात लई बौनाकी जबै उठि ऊदल ने है हाथमिलाया।
धनमाल दिये परमालिक ने जागीर में आल्हा गाँव लिखाया॥
मल्हना के दिल में धीर भयो ढेवा ने जभी था प्रश्न उठाया।
सैयद ने नहिं देर करी चट फ़ौजन माहिं बिगुल बजवाया॥

## ❀ आल्हा छन्द ❀

मीरा सैयद सुनि आल्हा से ❀ कहने लगे तुरत ही आन।

खबर भेजि सिरसा को दीजै ❋ आवैं साजि बंधु मलखान ॥
तापर ज्वाब दिया आल्हा ने ❋ सुनिये बनरस के सरदार।
नहीं बुलाओ मलखाने को ❋ नहिं वो करिहैं हंसी हमार ॥
भर २ बोली मलखे मारे ❋ गोली निकर जाय वा पार।
बात सही हमसे न जइहै ❋ चाचा मानों बचन हमार ॥
लड़िका नातिन से तुम चाचा ❋ अपना लश्कर करो तयार।
फ़ौजें साजो महुबे वाली ❋ जिनमें बड़े २ सरदार ॥
ब्रह्मा जागन सियानन्द को ❋ सङ्ग में अपने चलो लिवाय।
ढेवा सगुनी औ ऊदल को ❋ लीजे साथ तलसी राय ॥
बोला सैयद तब आल्हा से ❋ मन मेरे था यही बिचार।
और जरूरत ना ज्यादा की ❋ इतने काफी हैं सरदार ॥
बाजो डङ्का है महुबे में ❋ बीतन लागो हाहाकार।
हाथी साजन लगे महावत ❋ घोड़ा साजन लगे सवार ॥
तोप दरोग़ा तोपैं साजी ❋ औ चरखिन में दई धराय।
साजि बेंदुला ऊदल बैठा ❋ ढेवा चढ़ा मनुरथा जाय ॥
हरनागर घोड़े के ऊपर ❋ बैठा कुंवर महोबे क्यार।
आल्हा बैठा पचसावद पर ❋ ठाकुर मण्डरीक औतार ॥
तीन लाख से सैयद सजिगे ❋ घोड़ी सिंहन के असवार।
डेढ़ लाख दल जागन लाये ❋ भैने जौन चन्देले क्यार ॥
लेकर घोड़ा सङ्ग चौदह सौ ❋ आया कुंवर सियानंदलाल।
घोड़ करेलिया इंदल बैठा ❋ जिसको बरनि न जावे हाल॥
बौना डाकू कुड़हरि वाला ❋ ता सङ्ग सजे पांच सौ ज्वान।
और बयरिया डोलन लागी ❋ दलको मचन लगो घमसान॥
फौजकमनियरदलकेअफसर ❋ लश्कर लिये खड़े तैयार।
कूच बोल सैयद ने दीन्हां ❋ दलका मिलै न माना पार॥

मानो ततैयन छतना त्यागो ❋ टीड़ी निकरी फोरि पहाड़।
तैसे दल महुबे का निकलो ❋ लपकन लगी सिरोही बाढ़॥
गोल तिलगंन के छूटे हैं ❋ घूमत जावें लाल निशान।
उड़त फरहरा दरियाई के ❋ सूखत कुंवा ताल के पान॥
पटकत जात सूंड़ धरती में ❋ चक्कर बंधे मतंगन क्यार।
धौंरी बधियन के रथ रब्बा ❋ होवै जंगन की झन्कार॥
पहिया ढुरकत हैं तोपन के ❋ बंजर खेत भुवा हुइ जायँ।
धूरि उड़ानी आकाशै गै ❋ सूरज रहे धुन्ध में छाय॥
केहर गूढ़ छोड़ के भागे ❋ औ मुंह बाये फिरत सियार।
भूलि चौकड़ी गई हिरनों की ❋ पंछी भागे छोड़ बस्यार॥
रात औ दिन को मंजिल करके ❋ पथरी शहर गये नगिचाय।
देकर टप्पा बारह कोस का ❋ बोली हल्ट तलन्सी राय॥
जो जहं ठाढ़ो सो तहं रह गयो ❋ आगे बढ़त न कोई ज्वान।
जगह बराबर जहं पर देखो ❋ तम्बू दिये तुरत ही तान॥
हाथी हौदा संड़ियन काठी ❋ घोड़न तंग दिये खुलवाय।
फेंटें खुलि गईं रजपूतन की ❋ झंडन रही लालरी छाय॥
पहरेदार खड़े पहरे में ❋ जहं पर लागी चौक बजार।
करी कचेहरी जब आल्हा ने ❋ सारे बुला लिये सरदार॥
पाँच पान का वीरा धरिके ❋ ओल्हा बोला बचन सुनाय।
जो कोई खबर करे पथरीगढ़ ❋ उठिके बीरा लेय चबाय॥
सुनिके बानी यह आल्हा की ❋ क्षत्रिन मूड़ लीन औंधाय।
कोई हेरत ना बीरा तन ❋ कलशा पान गया कुम्हिलाय॥
हाथीराम औ रश्यामसिंह का ❋ सुनतै नाम जांय घबड़ाय।
सुवाराम की दहशत भारी ❋ क्षत्री कान हिलावैं नाय॥
नाम सुनत खन ज्वालासिंह का ❋ मुंह की सूखि गई सबलार।

भारी दहशत भैरोंसिंह की ❋ कर से छूटि पड़े तलवार ॥
शेखीखोरा मूंछ मरोरा ❋ लोटा लै झाड़े को जायं ।
कोई बैठे धरती खोदें ❋ रहे जनेऊ कोई चढाय ॥
कोई काहू से बोले ना ❋ पान का बीरा गया सुखाय।
यह गति देखीजबआल्हाने ❋ बोले नैनन नीर बहाय ॥
मछला रानी नहिं मिलनेकी ❋ चाचा कूच चलो करवाय ।
सुनिकेबानीनुनिआल्हा की ❋ सैयद बीरा लियो चबाय ॥

## सैयद का ज्वालासिंह के दरबार में जाना।

करी तयारी पथरीगढ़ की ❋ सिंहन घोड़ी भये सवार ।
मिला भेंट करि सबसे सैयद ❋ सारी माया मोह बिसार ॥
मसको ऐड़ा है घोड़ी के ❋ सिंहिन चली मधुरिया चाल।
नरियल ऐसे फोरत जावे ❋ चमके अष्टधात की नाल॥
जहां कचेहरी ज्वालासिंहकी ❋ पहुँचा बनरस का सरदार ।
भूमि बिरानी डगडग भारू ❋ सैयद देखैं आँख पसार ॥
अड़े छबीना दरवाजे पे ❋ पहरा हिले तिलंगन स्यार ।
पैग २ पे पैदल ठाढे ❋ दुइ २ पैग खड़े असवार ॥
बंधे चौतरा हैं ढालन के ❋ लागे सेलन के खरिहान ।
कूंधा लागे बन्दूकन के ❋ भाला तरकस चढ़े कमान ॥
सूर सुभट रणधीर बहादुर ❋ बैठे कुरसिन में सरदार ।
सुवाराम औ श्यामसिंह जी ❋ टिहुना धरे बैठ तलवार ॥
हाथीराम और भैरोसिंह ❋ बैठे बंगला के दरम्यान ।
भंग के गोला क्षत्री खाये ❋ बैठे झुकैं अफ़ीमी ज्वान ॥
ज्वालासिंह गद्दी पर बैठे ❋ पातुर नाच रही दिखलाय ।
पहुँचा घोड़ा जब सैयद का ❋ बंगला नाच बन्द हुइ जाय॥

छोड़ि सरंगी भडुवन धर दी ❀ रंडी खोल धरी पिसवाज।
बाजी नाल जबै सिंहन की ❀ बोला पथरी का महराज॥
कौन शहर के रहने वाले ❀ बोलो घोड़े के असवार।
कैसे आये पथरीगढ़ में ❀ कारज अटको कौन तुम्हार॥
बोला सैयद ज्वालासिंह से ❀ दक्खिन बसै महोबा गांव।
तहां के राजा परमालिक हैं ❀ जिनघर रहत बनाफर राव॥
उन्हींकीतिरियातुमहरलाये ❀ राखी महलन माहिं छुपाय।
पता पायके चढ़े बनाफर ❀ पथरी शहर लिया घिरवाय॥
होय इरादा जो लड़िबे का ❀ तो मैदान गहो तलवार।
करना चाहो राजी नामा ❀ डोला देव कुमारी क्यार॥
सुनिके बातें ये सैयद की ❀ जलसिंहहुकुमदियाफरमाय।
जान न पावै घोड़ी वाला ❀ इस पाजी को लेव बंधाय॥
झपटे शूर बीर बंगला में ❀ करमें गहिके कठिन कृपान।
घोड़ी छीन लेव बैरी की ❀ इस पाजी के काढ़ि परान॥
आगा घेरा पीछा घेरा ❀ चहुँ तरफा से लिया घिराय।
हल्ला बोल दिया ज्वानों ने ❀ मुंह से मारा मार सुनाय॥
घिरा देखि अपने को सैयद ❀ मनिया सुमिर महोबे क्यार।
प्रान गदोरिया पे धर लीन्हां ❀ खननन खींच लई तलवार॥
ताकि खोपड़िया तेगा मारे ❀ ताकी दुइ फांकें हुइ जाय।
हनै सिरोही जाकी गरदन ❀ नीचे शीश गिरे अरराय॥
नोक तेग मुँह में फिर जावे ❀ ताके कान नाक कटिजाय।
तेगा चूक जाय गरदन से ❀ छांटे भुजा तुरत ही जाय॥
ज्वालासिंहके अबबंगला में ❀ सैयद गबड़ी दई मचाय।
जाके टाप सिंहनी मारे ❀ खोपड़ी खीरा सी फटिजाय॥
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे ❀ छोटी बड़ी बकरियां खाय।

तैसे सैयद बंगला मारे ❁ धनकी धौंसदिखावत जाय ॥
अङ्ग भंग नर बहुतक हुइगे ❁ लौटैं पौटैं औ चिल्लांय ।
भागि मिहरियों के लहंगा में ❁ छिपके बैठे जान बचाय ॥
जौन ओर को सैयद दाबे ❁ सो दल काई सा फट जाय ।
दुइ सौ ज्वान हने सैयद ने ❁ चरबी अङ्ग गई लपटाय ॥
आये घाव कई सैयद के ❁ जामा हुआ निचोवन हार ।
भगे सिपाही ज्वालासिंह के ❁ बंगला डार २ हथियार ॥
मारत २ सैयद थक गये ❁ ताकत रही भुजन पर नाय ।
दुइ सौ ज्वान मरे पथरी के ❁ घोड़ी की बाग दई मुरकाय॥
आये सैयद जब तम्बुअन में ❁ भे मन खुशी बनाफर राय ।
कहा माजरा पथरीगढ़ का ❁ सैयद आल्हा से समझाय ॥
मांस पलड़ियों में बंट जइहै ❁ तब कहिं मिले मछुलदे नार ।
बोला ऊदल तब सैयद से ❁ गरुई हांक दई ललकार ॥
काह मसाला है दुश्मन पर ❁ जो वह ओढ़े गाजि हमार ।
अबतुमचाचातम्बुअनबैठो ❁ देखियो ऊदल की तलवार ॥

## ज्वालासिंह का देबी चंडी के पास जाना

सांय बैठिगे ज्वालासिंह के ❁ मनमें करने लगा बिचार ।
बड़े लड़इया महुबे वाले ❁ जिनकी बड़ी कड़ी है मार ॥
जाय मनावें हम देबी को ❁ तो वह मेरी करे सहाय ।
लेकर सामां सब पूजन की ❁ राजा गया मढ़ी में धाय ॥
हवन जगाया जब देवी का ❁ परघट भई जालिपा माय ।
बोली देवी ज्वालासिंह से ❁ तुमक्यों दीन्हांमोहिंजगाय॥
करि पैकरमा हाथ जोड़ के ❁ जलसिंहबोला बचनसुनाय ।
चढ़े बनाफर महुबे वाले ❁ पथरी शहर लिया घिरवाय ॥

राखो शरण मोहिं जगदम्बा ❀ अबकी जीत देव करवाय।
बोली दुरगा तब राजा से ❀ मेरे माथे रहना नाय॥
हमने बरजा तुमको पहले ❀ मत मछला से प्रेम बढ़ाय।
कही हमारी तुम मानी ना ❀ महुबे नैन लड़ाये जाय॥
सुनिके बातें ये चण्डी की ❀ जलसिंहलीन्हीं खींचकटार।
जो नहिं साथ हमारा देहौ ❀ माता मरब कटारी मार॥
हाथ पकड़ चण्डी ने लीन्हाँ ❀ जलसिंह मतीगमाओ जान।
जितने आये चढ़ि पथरीगढ़ ❀ सबके मेटूं पता निशान॥
भर ली हामी जब चंडी ने ❀ राजा चला कूच करवाय।
हुकुम फेरि लश्कर में दीन्हाँ ❀ श्यामसिंह से कहा सुनाय॥
जितने आये चढ़ि महुबे से ❀ तिनके शीश लेव कटवाय।
फ़ौज सजाकर जल्दी जाओ ❀ अरसा करो ज़रा भी नाय॥
पीछे लड़ना तुम बैरी से ❀ पहिले लड़ें जालिपा माय।
यह मन भाई श्यामसिंह के ❀ तुरतै लिया फ़ौज सजवाय॥
सजे रिसाले पथरी वाले ❀ हाथीसजा श्यामसिंह स्यार।
करी तयारी श्यामसिंह ने ❀ हाथी ऊपर भया सवार॥
घड़ी न बीती ना पल गुजरा ❀ पहुँचो समरभूमि में जाय।
गरजा बेटा ज्वालासिंह का ❀ भारी हांक दई गुहराय॥
कौन बहादुर भा दुनिया में ❀ ताको किला हमारो आय।
इतनां सुनकर सियानन्द ने ❀ बाज पपीहा लिया सजाय॥
पांचो कपड़ा तन में पहिने ❀ पाँचो बदन कसे हथियार।
सुमिरके देवता महुबे वाला ❀ पपिहा घोड़ा भया सवार॥
चलती बेरा बघ ऊदन से ❀ सियानन्द ने कही सुनाय।
देखि लड़ाई लो भैने की ❀ मामा मेरे उदयसिंह राय॥
लेकर लश्कर सियानंद फिर ❀ पहुँचा समरभूमि में जाय।

जहाँ पै हाथी श्यामसिंह का ❋ घोड़ा पपिहा दिया लगाय॥

## सियानंद का श्यामसिंह से लड़ना

समुहैं देखा सियानन्द को ❋ बोला श्यामसिंह ललकार ।
उमर तुम्हारी बहु थोरी है ❋ मुँह से बहै दूध की लार ॥
खींच तमाचा मुँह में मारैं ❋ तो झरि जांय बतीसो दांत ।
ताते कही हमारी मानो ❋ जावो लौटि करो न बात ॥
जाकर भेजो उस आल्हा को ❋ तुझसे नहीं झिलेगा वार ।
तब ललकारो सियानन्द ने ❋ सुनले पथरी के सरदार ॥
थोरी उमरिया थी कान्हां की ❋ कंसको दीन्हां धरनि पछार ।
मेरी तेरी अब बरनी है ❋ करले दांव सिरोही क्यार ॥
बातन २ में बतबढ़ भयो ❋ बातन बढ़ी चौगुनी रार ।
झुके सिपाही दोउ तरफा के ❋ लागे करन भड़ाभड़ मार ॥
पैदल २ की बरनी है ❋ औअसवार साथ असवार ।
सूँड़ि लपेटा हाथी भिड़िगे ❋ टपके मूठि मगरबी क्यार॥
कटि २ शीश गिरैं शूरन के ❋ बहने लगी ख़ून की धार ।
जो जहं ठाढ़ो है दङ्गल में ❋ तासों तहीं बजी तलवार॥
हाथी बढ़िगा श्यामसिंह का ❋ घोड़ा बढ़ा सियानंद क्यार।
लई सिरोही श्यामसिंह ने ❋ जामें छः अंगुल की धार॥
ताकि गर्दना सियानन्द का ❋ मारो तुरत श्यामसिंहराय।
बाज पपीहा दहिने हटिगा ❋ सियानंद ली वार बचाय॥
ऐड़ा मसका जब घोड़े के ❋ हौदा ऊपर पहुँचा जाय ।
सूंति सिरोही सियानंद ने ❋ श्यामसिंह पे दिया चलाय॥
ढाल फाटिगै गैंड़ा वाली ❋ गद्दी कटिमखमलकी जाय।
होश बिगड़ गये श्यामसिंह के ❋ मन में गये सनाका खाय॥

देबी दुरगा को ललकारा ❋ मैया जान बचाओ आय ।
अबकी बारी से बचिबे ना ❋ चण्डी मेरी करौ सहाय ॥
सुनिके स्तुति श्यामसिह की ❋ देबी दीन्हां जुल्म गुजार ।
सिंह के ऊपर देबी गरजै ❋ जादू दिया सिया पर डार ॥
असर किया है अब जादू ने ❋ घोड़ा गिरा धरनि भहराय ।
काँपन लागो सियानन्द है ❋ निकले बोल ज़बाँ से नाय ॥
काया पलटन जाकी लागी ❋ धरनी गिरा तुरत मुरझाय ।
सारा बदन हुआ पत्थर का ❋ बाकी अङ्ग रहा कोइ नाय ॥

## श्यामसिंह व ब्रह्मा की लड़ाई

लेकर ख़बर गया हरकारा ❋ पत्थर हुआ सियानंदलाल ।
करी तयारी तब ब्रह्मानंद ❋ मनमें सुमिर रजा परिमाल ॥
हरनागर घोड़े के ऊपर ❋ ब्रह्मा फांदि हुआ असवार ।
जहाँ पे हाथी श्यामसिंह का ❋ पहुँचा कुंवर महोबे क्यार ॥
बोला ब्रह्मा श्यामसिंह से ❋ हमरे साथ करो तलवार ।
सुनिके बातैं ब्रह्मानन्द की ❋ भाला लियो हाथ सरदार ॥
ताक के भाला श्यामसिंह ने ❋ ब्रह्मानंद पर दिया चलाय ।
आवत भाला ब्रह्मा देखा ❋ अपना घोड़ा दिया उड़ाय ॥
भाला जाय गिरा धरनी में ❋ ब्रह्मा लीन्हों वार बचाय ।
जब रग दाबी हरनागर की ❋ घोड़ा लगा बराबर जाय ॥
पिछली टापें धरि धरनी में ❋ दुइ मस्तीक अड़ाये पांय ।
मारो तेग़ा ब्रह्मानन्द ने ❋ मनमें सुमिर शारदा माय ॥
कटिके डंडा अम्बारी का ❋ लागो कलंगी में फिर जाय ।
सात पेंच चीरे के कट गये ❋ जौ भरि माथे गया समाय ॥
डिगी बतीसी श्यामसिंह की ❋ तब देबी से कही सुनाय ।
देर लगाओ जगदम्बे ना ❋ आकर जल्दी करो सहाय ॥

सुनी टेर जब श्यामसिंह की ❀ चंडी गई तुरत ही आय ।
डारो जादू ब्रह्मानन्द पै ❀ औ पत्थर का दिया बनाय ॥

## फ़ौज को पत्थर करना

भई खबरिया जब लश्कर में ❀ पत्थर हुआ चन्देला राय ।
अक़्लभूलिगै तुनिआल्हाकी ❀ अब हम करिबे कौन उपाय ॥
नीचे का दम नीचे रहिगा ❀ ऊपर ले गये राम उठाय ।
डायन हो गई मछला रानी ❀ डरिहै बंश नाश करवाय ॥
देखि उदासी तुनि आल्हा पै ❀ कहने लगा लहुरवा भाय ।
अब मैं देखूं उस बैरी को ❀ जिसका नामश्यामसिंह राय ॥
चाचा सैयद को ललकारा ❀ सारो लश्कर लेव सजाय ।
करो तयारी रणखेतन की ❀ अब नहिं राखो देर लगाय ॥
बाजो डङ्का तब लश्कर में ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
हाथी चढ़ैया हाथी चढ़िगे ❀ बाँके घोड़न के असवार ॥
जागन ढेवा ऊदल सैयद ❀ पहुँचे समरभूमि में जाय ।
लागि पलीता गये जरबिनमें ❀ धुंवना रहा सरग में छाय ॥
बढ़ी लड़ाई भै तोपन की ❀ बहु दल भरा भंज हुइ जाय ।
कुंका मसाला जब तोपनका ❀ लश्कर आगे दिया बढ़ाय ॥
भाला बरछी छूटन लागे ❀ जूझन लगे सिपाही ज्वान ।
सर २ सर २ कैंवर छूटै ❀ मर २ होवे लाल कमान ॥
श्यामसिंह औ जगनायक को ❀ मुरचा पड़ा बरोबर क्यार ।
देकर धोका जगनायक को ❀ मारी श्यामसिंह तलवार ॥
ढाल अड़ाय दई समुहे पर ❀ जागन लीन्हों वार बचाय ।
धूप दक्खिनी आहन गर्बी ❀ मारी जागन ने रिसियाय ॥
फीलवान हाथी का जूझा ❀ तब मन डरा श्यामसिंहराय ।
फेरि पुकारा है चण्डी को ❀ मैया मोहिं बचाओ आय ॥

जुल्म गुजारे है देवी ने ❋ मारा जादू तुरत चलाय ।
हन्सामन घोड़ा औ जागन ❋ दोनों पत्थर के हो जांय ॥
यह गति देखो जब सैयद ने ❋ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ।
धरिललकारा श्यामसिंह को ❋ तेरा काल गया निगचाय॥
ताला सैयद की बातैं सुनि ❋ गुस्सा हुआ श्यामसिंहराय ।
मारी स्याल ताकि सैयद के ❋ कीन्हीं देर ज़रा भी नाय ॥
घोड़ी सिंहन पीछे हटिगै ❋ धरती स्याल गई समियाय ।
सुमिरन करिके अमरगुरूका❋ सैयद मारी गुर्ज चलाय ॥
लागी गुर्ज जाय हौदे में ❋ गिरगे कलशसूबरन क्यार ।
उड़िगै छतरी अम्बारी की ❋ श्यामसिंह तबकही पुकार॥
देवी चंडी आओ जल्दी ❋ माता लीजै मोहिं बचाय ।
पढ़ २ जादू देवी मारे ❋ सैयद गये बहुत घबड़ाय ॥
ताला सैयद घोड़ी सिंहन ❋ दोनों पत्थर के हो जांय ।
श्यामसिंह से चंडी बोली ❋ बेटा सुन लो कान लगाय ॥
भारी लश्कर है महुबे का ❋ अपनो हाथी देव बढ़ाय ।
एक एक पर जादू डारें ❋ तो फिर बहुत रोज हो जांय॥
डारे जादू सब लश्कर में ❋ सबको पत्थर देंय बनाय ।
देवी चंडी की बातैं सुनि ❋ ना की देर श्यामसिंह राय॥
दाबा हाथी दुश्मन दल में ❋ बीच गोल में गयो समाय ।
पढ़ि २ जादू चंडी मारे ❋ अब कुछ रहा ठिकाना नाय॥
पड़े सामने जो जादू के ❋ सो वह पत्थर का बनि जाय ।
जो कोई भाग गया समुहें से❋ उसने लीन्हें प्राण बचाय ॥
हाथी घोड़ा बैल सांड़िया ❋ सबको पत्थर दिया बनाय ।
ऊदल ढेवा रण से भागे ❋ पीछे फेरि निहारे नाय ॥
आल्हा भागे लै इन्दल को ❋ बैठे छिप पर्वत में जाय ।

भरि २ हिलकी आल्हा रोवैं ❀ औ ऊदल से कहें सुनाय।
बहुत दफे हम तुमको बरजो ❀ पथरीगढ़ है बुरी बलाय ॥
कही हमारी तुम मानी ना ❀ सबकी नाश कराई आय।
हाथ न आई रानी मछला ❀ साराकुनबा दिया खपाय॥
सूना महुबा करिके आये ❀ अब को लेहै खबर हमार।
किसको भेजें गढ़ सिरसा को ❀ सोचैं मण्डरीक औतार ॥
खबर जो पइहैं बेशक अइहैं ❀ रुकिहैं नहीं बीर मलखान।
सुनिके बानीनुनि आल्हाकी ❀ बोला उदयसिंह बलवान॥
पहिले खबर न सिरसा भेजी ❀ अबक्योंरहे आप पछिताय।
अब क्याहंसी न मलखे करिहैं❀ जो तुम भ्रात रहे बुलवाय॥
ऐसे बचन कहे जब ऊदल ❀ आल्हा मूड़ लिया औंधाय।
धीरे २ आल्हा बोले ❀ बिगड़े साथ देत कोइ नाय॥
कहां के जाये कहां के बाढ़े ❀ औ कहं लाई मौत उठाय।
हत्यारी मछला के पीछे ❀ ख्वारी भई हमारी आय॥
तब समझाय कह्यो ऊदल ने ❀ भैया सोच देव बिसराय।
लिखी बिधाता की को मेटै ❀ जो दई ब्रह्मा कलमचलाय॥
इन्दल बेटा को तुम भैया ❀ काहे न सिरसा देव पठाय।
नाहीं करै नहीं बेटा से ❀ मलखे आये फौज सजाय॥

## इन्दल का मलखान के पास जाना

यह मन भाय गई आल्हा के ❀ बोले इन्दल से पुचकार।
जल्दी बेटा सिरसा जाओ ❀ भैया मलखे के दरबार॥
जाकर कहना तुम चाचा से ❀ देवी दीन्हां जुलुम गुजार।
पथरीगढ़ के मैदानन में ❀ मिटगा वंश बनाफरक्यार॥

आल्हा दादा की बातैं सुनि ❀ बोला कुंवर इंदलसी राय ।
बिना सवारी कैसे जावैं ❀ ऐसी आफ़त पड़े दिखाय ॥
आल्हा बोला तब इंदल से ❀ बेंदुल बाज़ खड़ा तइयार ।
भैया ऊदल के घोड़े पर ❀ बेटा हो जाओ असवार ॥
करी तैयारी तब इंदल ने ❀ बेंदुल ऊपर बैठा जाय ।
ऐड़ा मसका जब बेंदुल के ❀ घोड़ा उड़ा पंख फैलाय ॥
मंजिल सारी तयकरि इंदल ❀ पहुँचा मलखे के दरबार ।
उतरि बछेड़ा से भुंइ आवै ❀ घोड़ा थाम लेत थनवार ॥
जहां कचेहरी मलखाने की ❀ हाज़िर भयो इन्दलसीराय।
हाथ जोड़ि के करि पैकरमा ❀ इन्दल बोलाबचन सुनाय॥
देखी सूरत जब इन्दल की ❀ मलखे गोदी लिया उठाय ।
चूमि चाटिके गले लगाओ ❀ फिर इन्दल से कही सुनाय॥
आंसू टपकत क्यों नैनों से ❀ बेटा हाल देव बतलाय ।
बड़ी जोर से इन्दल रोया ❀ चाचा हाल कहो ना जाय॥
ज्वालासिंह पथरी का राजा ❀ लओमाताकापलंगमंगाय॥
येही कारण भई लड़ाई ❀ चाचा सुनो मल्हारे राय ॥
देवी चण्डी पथरी वाली ❀ पत्थर फ़ौजें दिया बनाय ।
इन्दल बेटा की बातें सुनै ❀ मलखे कालरूप हो जाय ॥
छाय लालरी गै नैनन में ❀ धक्का गया कलेजा खाय ।
मत घबड़ाओ अपने मनमां ❀ बेटा मेरे इंदलसी राय ॥
घोड़ी कबुतरी ना बुड्ढी भै ❀ ना बल खाय गई तलवार ।
भाभीमछलाकी खिदमतको ❀ लाऊं सुआपंखिनी नार ॥
जाकर देखूं उस देवी को ❀ मढ़िया गर्द देउं करवाय ।
ऊंचा झण्डा नीचे कर दूं ❀ डारूं ईट २ उतिनाय ॥

## मलखान को अमरगुरू के पास जाना

अब हम जाते झारखंड को ❋ जहं पर तपैं अमर गुरुग्वाल।
घोड़ी कबुतरी की पीठी पर ❋ बैठा बच्छराज का लाल ॥
इक बननाघा दुइबन नाघा ❋ तिसरे बन में पहुँचा जाय ।
जहां पै धूनीअमर गुरू की ❋ पहुँचा जाय बनाफर राय ॥
करि पैकरमा हाथ जोड़िके ❋ मलखे बोला बचन सुनाय।
जल्दी पलक खोलिये बाबा ❋ धूनी खड़े मल्हारे राय ॥
एकदिन पड़िगैशिवशंकर पै ❋ जब भसमासुर पड़ा पिछार।
पड़िगै बिपदा राजा नल पै ❋ खुंटिया लील गई थी हार॥
एक दिन पड़िगै हरिश्चन्द पै ❋ पानी भरा डोम घर जाय।
सोई भाभई बनाफलों पै ❋ पड़िगै गुरू अचानक आय॥
मझला भाभीको ज्वालासिंह ❋ बाबा पलंग लिया मंगवाय।
चढ़े बनाफर पथरीगढ़ पै ❋ चंडी जादू दिया चलाय ॥
हाथी घोड़ा फ़ौज रिसाला ❋ सब पत्थर का दिया बनाय।
मुल्क पहाड़ी झारा पत्थर ❋ है पथरीगढ़ बुरी बलाय ॥
बारह कोस लड़े तहं चंडी ❋ गरजै सिंह जालिपा क्यार।
शरण तुम्हारी बाबा आये ❋ चलिके करिये मदद हमार॥
तापर ज्वाब दिया अमरा ने ❋ तेरा दिया नहीं हम खांय।
रोज़ लड़ाई तुम्हरे घर में ❋ कहं २ जोगी करैं सहाय ॥
हमरे माथे तुम मत रहना ❋ अपनी करो जाय तलवार।
गरजा मलखे तब धूनी पर ❋ औ बाबा से कही पुकार ॥
समय पड़े की सब बातैं हैं ❋ आया तभी तुम्हारे पास।
राम कियो तुमको इसलायक ❋ तब मलखानकियाहैआस॥
मैं भर पाया तुम चेलों से ❋ तुम घर नित्यबजै तलवार।
कुटी हमारी कौन संवारे ❋ जो चेलों के मरूँ पिछार॥

खींच सिरोही मलखे लीन्हीं ❋ औ अमरा ते कही सुनाय ।
ना तुम भैया नारायण के ❋ जो तुम लेहौ मुझे बचाय ॥
पहिले मारूं तुमको जोगी ❋ पीछे अपने तजूं परान ।
बांधि जंजीरों से ले जावे ❋ तुमको सिरसा का मलखान॥
भुजा पकड़िके तब मलखेको ❋ अमरा छाती लिया लगाय ।
मत घबड़ाओ मन में बेटा ❋ बिगड़ी देंगे राम बनाय ॥
ज्ञान गुदरिया जोगी ओढ़ी ❋ बटुवा लिया गले में डार ।
बीन मुंदरिया औ मृगछाला ❋ सोंटा लीन्हां हाथ संभार ॥
उड़न खड़ाऊंपरचढ़ि जोगी ❋ तुरतै कूच दिया करवाय ।
मारि कबुतरी मलखे चलिभे ❋ पहुँचे गढ सिरसा में आय ॥

## मलखान का फौज लेकर चढ़ाई करना

नवले मुंशी से मलखे ने ❋ सारा हाल कहा समझाय ।
लिखकरचिट्ठीसब राजों को ❋ मुंशी जल्द देव पहुँचाय ॥
क़लम दवायत काग़ज़ लइकै ❋ चिट्ठी लिखी बनाय बनाय ।
दसखत डारे मलखाने ने ❋ मुंशी दीन्हीं मुहर लगाय॥
डाक सांड़ियन की लागी है ❋ रस्ता चलैं दिना औ रात ।
चारौ दिशाको कासिद छूटे ❋ बीते दिवस पांच औ सात ॥
चिट्ठी पहुँची सब राजन पै ❋ अपनी फ़ौज करैं तय्यार ।
लै २ फौजैं सिरसा आये ❋ दल को मिले न माना पार ॥
आई साहिबी लाखन वाली ❋ जिनमें बड़े २ सरदार ।
बारहु राजा छप्पन सूबा ❋ लाये आपनि फौज सवार ॥
जोगा भोगा नैनागढ़ से ❋ आये स्वानमती के भाय ।
करी खातिरी सबकी मलखे ❋ गफलत करी जरा भी नाय॥
सजिगै टुकड़ी सिरसावाली ❋ क्षत्रिन बांधि लिया हथियार ।

हाथी घोड़े तोप रहकले ❀ आगे चले छड़ी बरदार ॥
सजी कबुतरी मलखे वाली ❀ मलखे फांदि भये असवार ।
इन्दल बैठा रस बेंदुल पर ❀ जो मछला का राजकुमार ॥
सुलखे भैया मलखाने का ❀ सोऊ साज भया तैयार ।
कूच बोलि सिरसा से दीन्हां ❀ फ़ौजन का है नहीं शुमार ॥
असी सैकड़ा सांकर वाले ❀ औ बख्तरिया साठ हजार ।
आठ कोस दल लम्बा चौड़ा ❀ चमके कौंधा सों तलवार ॥
रात दिना जब चले बराबर ❀ पथरी शहर गये निगचाय ।
लाखनराना कनवज वाला ❀ तब मलखे से कही सुनाय ॥
आगे जगह नहीं टिकने की ❀ फौजें यहीं देव रुकवाय ।
यह मन भाय गई मलखे के ❀ तम्बू दीन्हें खड़े कराय ॥
पड़ी छावनी रजवाड़ों की ❀ झण्डा रहे फरहरा खाय ।
लस्करमिलगयोहैलाखनका ❀ जो हैं मंझद्वीप का राय ॥
बीच में तम्बू है मलखे का ❀ जामे नगिन झरोखा खाय ।
मलखे बोलत हैं इन्दल से ❀ मैं बेटा की लेउं बलाय ॥
कौन से पर्वत भैया छिप रहे ❀ औ कहं छिपा लहुरवा भाय ।
कौन कन्दरा में ढेवा है ❀ बेटा चलिके देव बताय ॥
बोला इंदल तब मलखे से ❀ चाचा सुनो मल्हारे राय ।
बारह टुकड़ी के पर्वत में ❀ दादा चाचा रहे छिपाय ॥
बबुरीबन की अब डांगन में ❀ सगुनी छिपा महोबे क्यार ।
इन्दल बेटा को सङ्ग लेकर ❀ चलिभा सिरसा का सरदार ॥
जौन से पर्वत आल्हा ऊदल ❀ मलखे तहाँ पहूँचा जाय ।
दोनों भैया मलखाने के ❀ छिपके बैठ कन्दरा जाय ॥
दादा कहिके मलखे टेरो ❀ आओ निकर बनाफर राय ।
बोल चीन्ह मलखे का ऊदल ❀ नुनि आल्हा ते कही सुनाय ॥

साहब जादे मौसी वाले ❋ बाहर टेरि रहे मलखान।
निकलो दादा अबतुम बाहर ❋ भैया जान बचाई आय॥
जैसे प्यासा पानी पीवे ❋ कोठा सावधान हो जाय।
तैसी खुशी भई आल्हा को ❋ मन में फूले नहीं समाय॥
निकरिके आल्हाबाहर आये ❋ मलखे चरन छुये हरषाय।
दौड़िके ऊदल मलखाने के ❋ लागे चरन तुरत ही आय॥
भर भर कोरी आल्हा भेंटें ❋ ऊदल गया गले लपटाये।
बिपतिके मारे भैया मिल रहे ❋ जैसे मिले बछा को गाय॥
भरिकै आंसू दोउ नैनन में ❋ आल्हा बोले बचन सुनाय।
उजड़ा महुबा फिर से बस गयो ❋ जो तुम मिले मल्हारेओय॥
आओ भागि महोबे चलिये ❋ अपनी २ जान बचाय।
देवी चण्डी की जादू से ❋ जिंदा बचे एक नर नाय॥
मोहिं न चहिये रानी मछला ❋ प्यारा मोहिं कुटुम परिवार।
ऐसी बिगड़ी पथरीगढ़ में ❋ जड़ से कटिगै नाक हमार॥
गरजिके मलखे बोलन लागे ❋ क्या तुम बको बनाफरराय।
घर बैठे रानी तुम खोई ❋ आती शरम जराभी नाय॥
दुनिया जाने तुमको दादा ❋ ओछी बात कहो जो भाय।
भई हंसाई बोवनगढ़ में ❋ इज्जत मिलीखाकमेंजाय॥
रानी मल्हना तुमसे पुछिहै ❋ कहं ब्रह्मा का आयेगमाय।
काह बतइहौ महुबे चलिके ❋ सो मलखे से देव बताय॥
तुम्हें हंसौवा का डर नाहीं ❋ सारा कुनबा दिया खपाय।
हमहूँ दोबब उस चंडी को ❋ कैसे लड़े कालिका माय॥
ऐसा फूंकूं मैं पथरी को ❋ लंका जस फूंकी हनुमान।
तब मैं बेटा बच्छराज को ❋ सांचो नाम बीर मलखान॥

सुनिके बातैं ये मलखे की ❋ आल्हा ठाकुर गये चुपाय।
आल्हा ऊदल मलखे इंदल ❋ दाखिल हुये फ़ौज में आय॥
बबुरी बन की अब डांगन में ❋ ढेवा सगुनी लिया बुलाय।
लेकर इंदल को गोदी में ❋ आल्हा गद्दी बैठे जाय॥

भुजा दाहिनी मलखे बैठे ❋ बायें डटे उदयसिंह राय।
बैठे ढेवा हैं तम्बुआ में ❋ जिसकासगुननखालीजाय॥
सूरज डूबि गये पश्चिम में ❋ पहुँचा समय रातिका आय।
तारागण सब चमकन लागे ❋ सन्तन धूनी दी परचाय॥

## इन्दल का बलिदान

वही समैया ऊदल बोले ❋ भैया सुनो बीर मलखान।
मछला भौजी हमसे कह दई ❋ देना इन्दल का बलिदान॥
शीश चढ़ैहो जो इन्दल का ❋ हुइहै जीत बनाफर क्यार।
जो तुम मोह करो बेटा को ❋ मिलिहै नहीं मछलदे नार॥
काटेशीशबिहंसिनिजसुतको ❋ खप्पर भरो जालिपा क्यार।
दिलको अपने यों समझा लो ❋ जन्मा इंदल नहीं कुमार॥

दोनों दीन हमारे बिगरत ❋ खोटी रचो श्री भगवान।
शीश चढावें ना इंदल का ❋ तो भाभी का जाय इमान॥
मरिके इंदल फिर औतरिहैं ❋ केहु दिन देहैं राम मिलाय।
गई आबरू फिर मिलिहै ना ❋ चाहे लाखों करो उपाय॥
जो कुछ बात कही ऊदल ने ❋ मलखे के मन गई समाय।
पूछन लागे फिर आल्हा से ❋ तुमहूँ मन की देव बताय॥

शोक सिंधु में आल्हा छाये ❋ पड़िगे मायाजाल में प्रान।
हां नाहीं कछु कहे न मुंह से ❋ यह तुम काह रचीभगवान॥
आजु आपदा मण्डरीक पर ❋ डारी आय मछलदे नार।
दूजे दुख सुत जाय गाँठ को ❋ तीजे मयामोह रहो मार॥
टप २ आँसु चुवैं आँखों से ❋ छाती धड़कि २ रहि जाय।
फिर से मलखे पूंछन लागे ❋ बोलो नेक बनाफर राय॥
तापर ज्वाब दिया इन्दल ने ❋ तुम मत पूछो चचा हमार।
पिता बचन पूरण हम करिहैं ❋ काटो शीश नहीं इनकार॥
नृप हरिश्चन्द्रऔबलिभूपति ❋ दीन्हें हते देह के प्रान।
मोरध्वजसुत प्रननहिंत्यागो ❋ अर्पण किया सिंह को प्रान॥
तिनके कुल में हमहूँ जन्में ❋ मनिबे मात पिता की बात।
बिन्दु तुम्हारे से पैदा हैं ❋ कैसे हनै नीत में लात॥
हाड़ मास या रुधिरकीकाया ❋ है सब बातन को अख्त्यार।
देर करो मत मलखे चाचा ❋ धरदो गर्दन पर तलवार॥
अबके सुत वा समया होते ❋ करते सुनो साफ़ इनकार।
प्रान हमारे क्या भारू हैं ❋ जो हम देवें शीश कटाय॥
चूरामणि पंडित से मलखे ❋ तुरतैं बोले बचन सुनाय।
लेकर सामां सब पूजन की ❋ पंडित चलो मढ़ी के माय॥
हुक्म पायके पंडित चलिभे ❋ संग में चले अमरगुरुग्वाल।
आगे पीछे मलखे ऊदल ❋ बीच में चलपरेउना लाल॥
ढेवा के संग आल्हा चलिभै ❋ पहुँचे जहां जाल्पिा माय।
देवी चंडी की मढ़िया में ❋ मलखे हवन दिया करवाय॥
पढ़ २ मंत्र छोड़ रहे आहुति ❋ बिनती करत बनाफरराय।
आभा बोली जगदम्बा की ❋ औ मलखे से कही सुनाय॥
चढ़के आये मेरे सेवक पै ❋ डरिहौं तुम्हें जान से मार।

सात जन्म लौं जीत न पइहौ ❀ चहे दिन रात करोतलवार॥
हाथ जोड़ मलखे भये ठाढे ❀ बोले चरनन शीश नवाय।
कौन खता भै बनाफलों से ❀ जो तुम रही क्रोध में छाय॥
हमने कौलकियाज्वालासिंह ❀ जो तू मछला देय मंगाय।
होगा बेटा जो मछला उर ❀ ताकी देवें भेंट चढाय॥
ऐसे बचन कहे जब चंडी ❀ बोला सिरसा का मलखान।
अब कब बेटा हो मछला के ❀ जो वह भेंट चढावे आन॥
एक पुत्र मछलो ने पाया ❀ जब नित झांकी मदी तुम्हार।
यही बिनय तुमसे जगदम्बा ❀ कीजे भेंट मेरी स्वीकार॥
करो न देरी होत अबेरी ❀ बानौ मुख से कहो उचार।
शीश चढावैं हम इंदल का ❀ मैया खप्पर भरैं तुम्हार॥
सुन के बातैं मलखाने की ❀ परगट भई जालिपा माय।
बोली चंडी पथरी वाली ❀ दीजै मेरो भोग चढाय॥
हाथ पकड़ि इंदल का ऊदल ❀ मारन चाहेव तेगा झुमाय।
मोह जाल में ऊदल बांधिगे ❀ तेगा छूट हाथ से जाय॥
यह गति देखी जब मलखे ने ❀ पकड़ा हाथ इंदलसी क्यार।
मोह भतीजा का कोन्हों ना ❀ गर्दन मसक दई तलवार॥
कटिकै शीश गिरा सिंहासन ❀ मढिया लोथ गिरी भहराय।
हाथ पसार तुरत चंडी ने ❀ लओ इन्दलकाशीशउठाय॥
बोली चंडी फिर मठिया में ❀ तुम सुन लेव बनाफर राय।
भोग आपना हम भरि पाया ❀ तेरा लाल देंय लौटाय॥
लेकर शीश तुरत देवी से ❀ धड़ परधराअमरगुरुद्याल॥
अमृत लाकर चंडी छिड़का ❀ अम्मर हुआ परेउना लाल।
कुमरइन्दलसीको जगदम्बा ❀ अपनी छाती लियालगाय॥
संकट पड़े तहां तुम सुमिरौ ❀ आकर बेटा करब सहाय॥

बोली देवी फिर मलखे से ❀ सुन लो सिरसा के सरदार।
दिन दुपहरअब पथरी लूटो ❀ तुमसे गई बचन हम हार॥
सुनिके बानी महरानी की ❀ ज्ञानी खुशी भये मलखान।
देर न कीन्हां फिर चल दीन्हां ❀ सबही लश्कर पहुँचे आन॥
उठिगे चौकी अब चण्डी की ❀ अमराअपनी दिया बिठाय।
बीर छोड़ि दिये अमरगुरू ने ❀ हुलका फैलि शहर में जाय॥
अली गली में फिरैं चुरैलैं ❀ डाकिनशाकिन बुरीबलाय।
फिरै मसायन चौराहों में ❀ लड़के मारि २ के खांय॥

लगी शीतला पथरीगढ़ में ❀ रैयत बहुत गई घबड़ाय।
पीर औलिया और महम्दा ❀ घर २ आफत दई मचाय॥
पड़ी मुसीबत पथरीगढ़ में ❀ अबकुछ रहा ठिकाना नाय।
कोसै रैयत ज्वालासिंह को ❀ दुश्मनतेरा बुरो होय जाय॥
मरगईतिरियांक्यादुनियाकी ❀ जो मछलाको रखा चुराय।
जब रावण सीता हर लाया ❀ लंका मिली खाक मेंजाय॥
सोइ गति होइहैपथरीगढ़की ❀ यहमोहिंआंखिनपडैदिखाय।
जहां पै फ़ौजैं महुबे वाली ❀ अमरा तहां पहूँचा जाय॥

लेकर पुड़िया जादू वाली ❀ पढ़िफ़ौजन पर दिया चलाय।
जादू दूर भई चंडी की ❀ सबको मानुष दिया बनाय॥
भई खुशाली सब लश्कर में ❀ आल्हा फूला नहीं समाय।
हुकुम फेरि मलखे ने दीन्हां ❀ भैया सुनो लहुरवा भाय॥
घेरि शहर पथरीगढ़ लीजै ❀ सारी फ़ौजों को सजवाय।
खोदिबैठका ज्वालासिंह का ❀ गदहन हल देवो चलवाय॥
करिहैंयाद काहज्वालासिंह ❀ केहु घर बसैं बनाफर राय।
सुनिकै बातैं मलखाने की ❀ ऊदलकमरबन्द हुइ जाय॥

हुकुम फेर लश्कर में दीन्हां ❋ फ़ौजन डङ्का देव बजाय ।
चोब नगाड़े में पड़ते खन ❋ जलसिंहगया सनाकाखाय ॥
श्यामसिंह से पूछन लागे ❋ किसका डङ्का पड़े सुनाय ।
तू तो कहता था महुबे के ❋ सब मरि गये बनाफर राय ॥
कौनकालश्करअबचढ़आया ❋ मारू बाजा पड़े सुनाय ।
हमको मालुम यह होता है ❋ मलखे आया फ़ौज सजाय ॥

अमरगुरू को सङ्ग में लाया ❋ पथरी शहर घिराया आय ।
सुनिकै बातैं श्यामसिंह की ❋ जलसिंह गये सनाका खाय ॥
देवी चंडी की मढ़िया में ❋ राजा फेरि पहूँचा जाय ।
हाथ जोड़ के अरज गुजारी ❋ तुम सुन लेव जालिपामाय ॥
मलखे चढ़ि पथरी में आया ❋ जोगी अमरा साथ लिवाय ।
पत्थर फ़ौजैं तुमने कीन्हों ❋ अमरा मानुष दिया बनाय ॥
अबकी माता मोहिं बचालो ❋ जाऊँ बार २ बलिहार ।
बोली देवी तब राजा से ❋ तू है दगाबाज़ मकार ॥

भोग हमारा मलखे दीन्हां ❋ ठाकुर सिरसा का सरदार ।
मेरे माथे अब मत रहना ❋ जाकर करो जाय तलवार ॥
होशबिगड़िगेज्वालासिंहके ❋ घूंटी लार पेट ना जाय ।
चलि भये राजा तबमंदिरसे ❋ मन में बार २ पछिताय ॥
गैल गोटैयां बैरिन हो गईं ❋ जिन पै राह चली ना जाय ।
धीरे २ टरकत जावैं ❋ लगत चपेटा पैरन माय ॥
एक कदम जो धरे अगारू ❋ दूजा लौटि पिछारू जाय ।
आकर पहुँचा दरबारों में ❋ चारो बेटा लिया बुलाय ॥
धोखा दे रही चंडी देवी ❋ बेटा करिहौ कौन उपाय ।
कैसे जीतोगे दुश्मन को ❋ रहि २ प्राण रहे घबड़ाय ॥

# श्यामसिंह का फ़ौज लेकर मैदान में आना

बोले लड़के ज्वालासिंह से ❀ दादा करो नहीं परवाय ।
मारे मारे तलवारिन के ❀ दें दुश्मन की खोज मिटाय ॥
सुआराम औ हाथीराम ने ❀ फ़ौजनबिगुलदियाबजवाय।
बाजो डङ्का पथरीगढ़ में ❀ जाकी गुंज पताले जाय ॥
जितनी छावनी पथरीगढ़ में ❀ सबमें खबर दई करवाय ।
पिटे मुनादी गलियारन में ❀ लश्कर कमरबंद होयजाय॥
सजि गई पल्टन रंगरूटनकी ❀ तगड़ी फ़ौजकाइयन क्यार।
सजे सिपाही पथरी वाले ❀ कम्मर बांधि २ तलवार ॥
माड़वार औ तौरधार के ❀ घाटी सिंधुपार के ज्वान ।
काबुल वाले सजे रिसाले ❀ ले २ हाथ नगिन किरपान॥
लै २ तेगा सजि गये आगा ❀ नागा हाथ छोड़ मुंहखांय।
जितनी फ़ौजें थीं पथरीगढ़ ❀ सबरी गोलबांधि रहिजायँ॥
बड़ी २ तोपें अष्टधात की ❀ दीन्हीं समरभूमि जुतवाय ।
हाथी घोड़ा औ रथ रब्बा ❀ लीन्हें सबही तुरत सजाय ॥
सजे सांड़िया पथरीगढ़ के ❀ जिनपै बैठि गये कटियार।
करी तयारी सुआराम ने ❀ बांधी जोधपुरी तलवार ॥
हाथी साजो भैरोंसिंह ने ❀ मुंडा हौदा दिया धराय।
पांचो कपड़ा रचि २ पहिने ❀ लोहा अङ्ग लिया लपटाय॥
लगी नसेनी जब हाथी के ❀ भैरोंसिंह हुआ असवार ।
भई तयारी हाथीराम की ❀ जिनके बलकी नहीं शुमार॥
पहिलेपहिनीकाली अँगरखी ❀ ताके ऊपर कुलह कबार ।
मीन मछरिया को बख्तर है ❀ उड़िजायबाढ़सिरोहीक्यार॥
ताके ऊपर झिलम संवारी ❀ जामें सांग नहीं अनिगाय ।

मूड़ की सांकरि भुँइलौं लोटे ❋ कड़िया चमक२ रहि जाय॥
टोप झलरिहा धरि माथे पर ❋ छाती लीन्हां तवा जड़ाय।
जोड़ी बांधी कड़ाबीन की ❋ बत्तिस टका नवाबी खाय॥
ढाल उठाई गैंडा वाली ❋ बाईं ओर लीन लटकाय।
लई कमनिया मिर्जापुर की ❋ गांसी सेर भरे की खाय॥
सोरह बिछुवा बारह बगुधा ❋ गहिलई पथरकलाझनकार।
छप्पन छुरियाँ कम्मर घुरसीं ❋ बाँधी जोधपुरी तलवार॥
गही कटारी बूँदी वाली ❋ ऊना खास बिलायत क्यार।
भाला बांधा नागदौन को ❋ चिरमा दुहअंगुलकीधार॥
एसा सज गयो हाथीराम है ❋ मानो इन्द्र अखाड़े जाय।
सज कर बैठा है हाथी पर ❋ मनमेंसुमिर जालिपामाय॥
श्यामसिंह हाथी पर बैठा ❋ धरि २ नेत कलिन परपांय।
डबल अलारम बजा फ़ौज में ❋ चलतूबिगुलदियाबजवाय॥
डोली धरा शेष अकुलाने ❋ इंदल डोले चढ़े बिमान।
नचै जोगिनी खप्पर लेके ❋ करमें गहिके नागिनकृपान॥
खून पियेंगी हम शूरन का ❋ मनकी अपनी तपनबुझाय।
ईंट फूटिके रोरा होय गई ❋ रोरा फूटि छार हो जाय॥
छार उड़ानी आकाशै गै ❋ औ रबि रहे धुंध में छाय।
हवा के लागे झंडा लहके ❋ जामें नगिन झरोखाखाय॥
घंटा बाजें गल हाथिन के ❋ जगा बजे बछेड़न क्यार।
पांय पैंजना हैं ऊंटन के ❋ दलमें होत जाय झनकार॥
बजैं घुँघुरवा रथ बैलन के ❋ डङ्का होत गोल में जाय।
भोर भुरहरे पहु के फाटत ❋ लश्कर गया धुरे में आय॥
श्यामसिंह आगे बढ़ि आये ❋ अपना हाथी तुरत बढ़ाय।
रणकादुलहाफ़ौजकामालिक ❋ मेरे होय सामने आय॥

बैरी अपने का डङ्का सुनि ❋ मलखे बोला बचन सुनाय।
किसके पहरे लाखन सोवो ❋ यह सिर पड़े तुम्हारे आय॥
सुनिके बातें मलखाने की ❋ कहने लगा उदयसिंह राय।
जो मरि जइहैं लाखन राना ❋ कनवज काह बतइहौ जाय॥
लाखन बोले तब ऊदल से ❋ ओछी बात कहो तुम नाय।
श्यामसिंह के अब मोहरे पर ❋ खून की नदिया देंय बहाय॥
साजी भुरही लाखन राना ❋ सोने दाँत दये मढ़वाय।
घंटा बांधि दियो गर्दन में ❋ आंखिनकजरादियोलगाय॥
करी लकीर सूड़ सेंदुर की ❋ मानो धनुष उवैं असमान।
दृष्टि शनीचर धरि माथे पर ❋ बायें छाप बीर हनुमान॥
लई नसेनी मलयागिरि की ❋ सो भुरही के दई लगाय।
सजकर लाखन हथिनी बैठे ❋ अजगर सूर क़नौजी राय॥
मारू बम्ब बजा लाखन का ❋ दङ्गल आगे दिया बढ़ाय।
तीन घड़ी के अब अरसा में ❋ लाखन समर पहूँचा जाय॥

## लाखन और श्यामसिंह की लड़ाई

हथिनी देखी जब लाखनकी ❋ कहने लगा श्यामसिंह राय।
किनके लड़का किनके नाती ❋ आपन नाम देव बतलाय॥
बोला लाखन श्यामसिंह से ❋ नाती बेन चक्कवे क्यार।
लड़िका आहिन रतीभान के ❋ औ क़नवज है बतन हमार॥
सङ्ग मछला के सुवापंङ्खिनी ❋ पाजी तेरी जांब लिवाय।
लाखन राना की बातें सुनि ❋ बोले श्यामसिंह रिसियाय॥
होके राजा तुम कनवज के ❋ आये सङ्ग गुलामन क्यार।
तुम मिल जाओ गोल हमारी ❋ राजा कनवज के सरदार॥
यह भई बानी तब लाखन की ❋ ओ अभिमानी बात बनाय।

कायर कूर मिलैं बैरी से ❀ ओही करैं खुशामद आय ॥
छिनरामरदछिनारमेहरिया ❀ बिछुड़े मिलैं सेज पर जाय ।
भाई बहन मिलैं नैहर में ❀ जेहिदिनखसमलिवावनजाय॥
हम तो मिलिबे तलवारिन से ❀ क्या तू मोहिं रहा धमकाय ।
गुस्सा होकर श्यामसिंह ने ❀ दओफ़ौजनमें हुक्म सुनाय॥
दे देव बत्ती मेरी तोपन माँ ❀ इन पाजिन को देव उड़ाय ।
दोऊ तरफ से चले खलासी ❀ तोपन दीन्हीं आग लगाय ॥
धुवाँ के बादल मंडल छाये ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
गोला निकरत हैं तोपन से ❀ धरती खात दरारा जाय ॥
लागे गोला जा हाथी के ❀ दे मठिया सम धरनि गिराय ।
गोला लागे जा घोड़ा के ❀ चारो सुम्म गर्द हो जाय ॥
जौने रथ मा गोला लागे ❀ पहिया धुरी देय अलगाय ।
गोला लागे जा सड़िया के ❀ ताको कूल जुदा हुइ जाय॥
फु'केमसाला जब जरबिनके ❀ बजने लगी तहाँ तलवार ।
अपन बिराना कोइ न चीन्हें ❀ हौदा पड़ी हूल की मार ॥
तेग़ा बैठे खुपड़ी कट जाय ❀ उरझे फिरैं रकेबन पाँय ।
यह गति बीतत मैदानन में ❀ सूधे गीध मांस ना खांय ॥
गुप्त चुरैलैं मङ्गल गावैं ❀ ठाढ़े जिंद बजावैं ताल ।
फिरैं जोगिनी खप्पर लीन्हें ❀ स्वानन गले पड़े जयमाल॥
गिद्ध कुड़रिया दे २ नाचें ❀ औ कौवन की लगी बजार।
रुण्ड मुण्ड से धरती पटिगै ❀ बहने लगी खून की धार ॥
चारो बयरियन के मचका में ❀ अब निरमोह बजी तलवार।
सूंड़ लपेटा हाथी भिड़िगे ❀ कला भिड़े बछेड़न क्यार ॥
घैया डारे रण में बिलखैं ❀ चिरुअक पानी को चिलांय ।
मोहर कटोरा पानी हुइगा ❀ घैया बिना मौत मरि जांय॥

जैसे फुहारा से जल बरसै ❀ ऐसे निकरे खून की धार।
भाला बरछी छूटन लागे ❀ सूखे निकर जांय वा पार॥
बम्ब के गोला कहुँ २ बरसैं ❀ कहुँ २ चलैंअगिनियां बान।
फुके मड़ैया सी लश्कर में ❀ औ बिन मारे मरैं जवान॥
मारत भाला नीको लागे ❀ औ खैंचत में कढ़ें परान।
आतैं सहित पेटसे निकलें ❀ भाला ऐंचिलेत जो तान॥
अङ्ग भङ्ग क्षत्रिन के हुइगे ❀ कला कटे बछेड़न क्यार।
तेग्रा चले खटाखट रण में ❀ आहट नहीं करै तलवार॥

८

काहू रथ की धुरी टूटि गई ❀ काहू के पहिया गये समाय।
चले सिरोही बे निरमोही ❀ कोई न आपन पड़े दिखाय॥
चल रही गोली खेलैं होली ❀ बोली आरत पड़े सुनाय।
हाहाकारी है भयकारी ❀ सारी अनी गई बिलाय॥
लागत भाला भागे लाला ❀ माला जपत आड़ में जाय।
कढ़त पसीना धड़कत सीना ❀ मीना भांति रहे बिलखाय॥
बूड़जुलफियांगईं ज्वाननकी ❀ टपकत मूठ मगरबी क्यार।
जैसे बदरिया में जल झूमे ❀ रण में झूमि रही तलवार॥

लगत कटारी भई खुवारी ❀ रङ्ग रसियन के सुनो हवाल।
तेल जुलफियन में डारत थे ❀ गलियन चलैं मिरोरा चाल॥
जब सुधि आवैमाईबाप की ❀ ठाढ़े पटकि देंय तलवार।
रेख उठन्ते क्षत्री रोवैं ❀ रण में छोड़ि २ डिड़कार॥
बारी उमरिया पातकलागो ❀ नाहक होगयो ब्याह हमार।
एकौ रैन चैन नहिं कीन्हीं ❀ सोये नहीं बांह गल डार॥
आये साले चौथी ले गये ❀ नहिंकरि पाओभोग बिलास।
कीन्हीं बिदा नहीं ब्याहे में ❀ बैरिन भई हमारी सास॥

हते सिपाही मन के कच्चे ❋ अब तिनहूँ के सुनों हवाल ।
पगड़ी खोलि आपनी तुरते ❋ लीन्हां बांधि सिरोही ढाल ॥
आवत देखैं कोऊ शूर को ❋ रोकर उनसे कहें पुकार ।
हम ब्योपारी जयपुर वाले ❋ बेंचन आये थे हथियार ॥
दशाभयानक रणकी हो गई ❋ स्वारी भई नरेशन क्यार ।
लोह लुहाने महुबे वाले ❋ हन २ करैं करारी मार ॥
लाखन राना श्यामसिंह का ❋ मुरचा पड़ा बरोबर क्यार ।
हनी सिरोही श्यामसिंह ने ❋ लाखन लिया ढाल पै वार ॥

टूटि सिरोही धरनी गिरिगै ❋ बचिगयो तिल्काकेरकुमार ।
टंगी कमनियां थी हौदा में ❋ श्यामसिंह ने लिया उतार ॥
मर मर मर मर रौंदा मरके ❋ दोनों सुवा एक हुइ जांय ।
डाटिके माथा लाखन जू का ❋ सनमुख गांसी दई चलाय ॥
लाखन चूकि गये हौदा में ❋ गांसी लगी भुजा में जाय ।
हलका घाव भुजा में आया ❋ लाखन पट्टी लई बंधाय ॥
फिर ललकारा है सुपना को ❋ मेरी हथिनी देव बढाय ।
बजो कुल्हाड़ा जब भुरही पै ❋ हथिनी भरी रोश में आय ॥

जहां पै हाथी श्यामसिंह का ❋ भुरही ठोकर मारी जाय ।
ऐसी ठोकर भुरही मारी ❋ दओ हाथीकोधरनि बिठाय ॥
तेगा हाथ नागिन ले लाखन ❋ लेकर फूलमती के नाय ।
ताकि गर्दना श्यामसिंह का ❋ मारी कुंवर कनौजी राय ॥
लागो तेगा खुलि गयो भेजा ❋ गर्दन शीशलटकि रहिजाय ।
श्यामसिंह जब रण में जूझे ❋ पहुँचा जाय बौनिया राय ॥
चीरा कलंगी पाग बैंजनी ❋ गले का कंठा लिया उतार ।
छीन के हाथी श्यामसिंह का ❋ बैठा कुड़हर का सरदार ॥

# भैरोंसिंह की लड़ाई

श्यामसिंह जो रण में जूझे ❋ भैरोंसिंह दिया ललकार।
भागे लाखन जान न पइहौ ❋ दुश्मन लेहौं शीश उतार॥
बोला सैयद नूरदीन से ❋ बेटा देर लगाओ नाय।
अपनी ओसरी पूरी कर दी ❋ जो महराज कनौजी राय॥
भैरोसिंह के अब मुरचा पर ❋ बेटा नूरदीन तुम जाव।
हनिके गांसी दो दुश्मन के ❋ जासों होय करारो घाव॥
अब्बा सैयद की बातैं सुनि ❋ नूरदीन नहिं करी अबार।
जहां पै हाथी भैरोसिंह का ❋ गरुई हांक दीन ललकार॥
क्या बकवाय करै लाखन से ❋ वो हैं मंझद्वीप के राय।
हम तुम खेलैं रणखेतन में ❋ दुइ में एक आंकुरहि जाय॥
यह मन भाय गई भैरों के ❋ मारी तुरत खींच तलवार।
बायें से हाथी दहिने हुइगा ❋ बचिगा पूत तलंसी क्यार॥
होकर गुस्सा नूरदीन ने ❋ दतिया वाली सांग उठाय।
करिके क्रोध जोश में भरिके ❋ भैरोंसिंह पर दिया चलाय॥
आवत सांग देखि भैरोसिंह ❋ अपनो हाथी लिया हटाय।
बचिगा बेटा ज्वालसिंह का ❋ धरती सांग गई समियाय॥
लई कमनियां भैरोसिंह ने ❋ गाँसी सेर भरे की खाय।
ताकि के मारा नूरदीन के ❋ लागो तीर हाथ में जाय॥
नूरदीन के घाव आयगा ❋ निकरी तुरत खून की धार।
ऐसा ज़ख्म हाथ में आयो ❋ क़ब्जा नहीं सधे तलवार॥
निश्चय होयगा नूरदीन को ❋ मेरा आय गया अब काल।
हाथ हमारा ढीला पड़िगा ❋ भैया सुनो मेरे हथवाल॥
प्राण बचाओ पीलवान तुम ❋ हाथी जल्दी देव भगाय।
नूरदीन मुरचा से भागे ❋ पहुँचे इन्द्रजीतसिंह आय॥

डाटिके बोला भैरोंसिंह से ❋ दुश्मन खबरदार हो जाय ।
रहो न धोखे नूरदीन के ❋ हम यमपुरी देब दिखलाय ॥
बांधिके चबुरी इन्द्रजीत ने ❋ ऊना लिया बिलायत चार ।
घुमा के मारा भैरोंसिंह के ❋ मन में सुमिर राम करतार ॥
हलका घाव भयो भैरों के ❋ क्षत्री भरा रोष में आय ।
देकर धोका इन्द्रजीत को ❋ मारा भाला तुरत चलाय ॥
लागो भाला जाय रान में ❋ बहने लगी खून की धार ।
इन्द्रजीत मुरचा से भागो ❋ हिम्मत गई ज्वान की हार ॥

## ऊदल का भैरोंसिंह को क़त्ल करना

भगते देखा इन्द्रजीत को ❋ ऊदल घोड़ा दिया बढ़ाय ।
जब ललकारा भैरोंसिंह को ❋ क्याजम चढ़े भुजों पर आय ॥
टारि मुहाफा अम्बारी का ❋ भैरोंसिंह ने कहा सुनाय ।
अबै महोबा ढिग नियरे है ❋ फिर घर लाखकोस होजाय ॥
मेरे समुहे से भगि जाओ ❋ नहिंसिरकाटि देंय भुइंडार ।
मछला भाभीकी खिदमतको ❋ मैं लेजाऊं बहिन तुम्हार ॥
कौन भरोसे पर तू पाजी ❋ पथरी खोदि कराऊं ताल ।
लेलूं डोला बहिन को तेरी ❋ तब मैं देशराज का लाल ॥
बात करेजे में जा लागी ❋ बोली निकर गई वा पार ।
खींच सिरोही भैरों मारी ❋ ऊदल लिया ढाल पर वार ॥
खांड़ बिजुलियाऊदलतानी ❋ मनिया सुमिर महोबे क्यार ।
खैंचि के मारा है भैरों के ❋ तब लोहू की छुटी फुहार ॥
कटिके शीश गिरा गर्दन से ❋ हौदा लोथ गिरी भहराय ।
भैरोंसिंह जब रण में जूझे ❋ हाथीराम पहूँचे आय ॥
तिनके मुर्चा ब्रह्मा आये ❋ अपनो घोड़ा तुरत बढ़ाय ।
बड़ा लड़ैया मल्हना वाला ❋ मुर्चा अपना दिया लगाय ॥

दहशत भारी है मलखे की ❀ कोई कान हिलावै नाय।
[illegible] जोड़ कर मलखाने से ❀ जलसिंह करीखुशामदआय॥
[illegible]न के नौकर हमको छोड़ो ❀ वक़्त पड़े पर करैं सहाय।
[illegible] छोड़ दो दोउ बेटनकी ❀ लो इन्दल का ब्याह कराय॥
यह मन भाय गई मलखे को ❀ तुरतै दिया क़ैद छुड़वाय।
लूट बन्द पथरी की हुइगै ❀ जलसिंहमड़वादिया छवाय॥
बनके दूल्हा इंदल आये ❀ दुलहिन सुवापंखिनी नार।
कन्यादान दिया ज्वालासिंह ❀ सातो दिया भांवरे डार॥
जितनी फ़ौजैं थी धूरे पर ❀ सबको भोजन दिया पठाय।
दान दहेज दिया बहुतेरा ❀ आल्हा फूला नहीं समाय॥
तुम सबलायकहम नालायक ❀ ज्वालासिंह ने कही सुनाय।
खिदमतगारी में हाज़िर हैं ❀ दीजे ख़ता मेरी बिसराय॥
सैयद बोले तब मलखे से ❀ बेटा मानो बचन हमार।
नातेदार समझि जलसिंह को ❀ दीजे गद्दी पर बैठार॥

## रुख़सत की तैयारी

चाचा सैयद की बातैं सुनि ❀ मलखे दिया ख़ता बिसराय।
एक डोले में सुवापंखिनी ❀ यक में मछला बैठी जाय॥
दोनों डोला चले महल से ❀ ऊदल दीन्हों द्रव्य लुटाय।
कूच कराय दई मलखे ने ❀ दीन्हीं मेगज़ीन उखराय॥
करिके मंजिल पथरीगढ़ से ❀ महुबे शहर पहूँचे आय।
डोले पहुँचे रनवासों में ❀ भे मन खुशी दिवलदे माय॥
आनन्द बधैया महुबे बाजे ❀ सखियां करैं मंगला चार।
तीन रोज न्योतहारी राखे ❀ आल्हा कर आदर सत्कार॥
बिदा मांगि के सिगरे राजा ❀ अपने वतन पहूँचे जाय।

मल्खे चले गये सिरसा को ❋ सब भैयन को शीश नवाय।।
आल्हा ऊदल गये कचेहरी ❋ जहं दरबार चन्देला क्यार।
जो कुछ ग़लती हो कथिबे में ❋ ताको लीजै सुजन संभार।।
जैसी लड़ाई भै पथरी में ❋ अमोलसिंह ने कथी बिस्तार।
देवी शारदा तुम्हें न भूलैं ❋ नैया खेय लगाई पार ।।
गाँव हमारा खास करौली ❋ लागै ज़िला कानपुर क्यार।
बिस्नूलाल मेरे सहकारी ❋ ढोलक बजाने में होशियार।।
रामसनेही औ नारायण ❋ हैं बचपन के मित्र हमार ।
रामप्रसाद और बेनीसिंह ❋ रावत प्रेम भाव ब्योहार ।।
चन्द्रपालसिंह भाय चचेरे ❋ हैं हिरदय से अधिक पियार।
नागपंचमी थी सावन की ❋ औदिन आय पड़ा गुरुवार।।
सत्तानबे संवत उनइस सौ में ❋ कीन्हां मछला हरण तयार ।
श्रीकृष्ण जो पुस्तक वाले ❋ उनको सौंपदियाअधिकार।।
सुरजा हरण लिखैंगे आगे ❋ उसमें भई भयंकर मार ।
यहां से आल्हा बन्द करत हैं ❋ सबसे करके राम जुहार ।।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

इति मछला हरण नम्बरदार कु० अमोलसिंह कृत संपूर्णम्



बम्बई छापाखाना कानपुर-१

# दैनिक सन्ध्या, यज्ञ व भजन

का अत्यन्त शुद्ध उच्चारण व मधुर आवाज में रिकार्ड किया

**कैसेट**

(आयातित कलपुर्जों व आँटोमैटिक मशीनों द्वारा बने कैसेट)

**शताब्दी स्थल पर हमारे स्टाल में ही उपलब्ध**

असली क्वालिटी के लिए कैसेट कवर पर AKC का निशान अवश्य देखें

कुन्स्टोकॉम इलैक्ट्रोनिक्स (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
(ASSOCIATES OF AKC HOLDINGS, WEST GERMANY)
न० 14, मार्केट-2, फेस-2, अशोक विहार, देहली-52
फोन : 744170, 7118326 टैलेक्स : 31 4623 AKC

नोट :— वड़ी संख्या में इस कैसेट के आर्डर पर संस्थाओं को कल्पनातीत छूट।

का अत्यन्त शुद्ध उच्चारण व मधुर आवाज में रिकार्ड किया

कैसेट

ओ३म्

# दैनिक सन्ध्या, यज्ञ व भजन

का अत्यन्त शुद्ध उच्चारण व मधुर आवाज में रिकार्ड किया

**कैसेट**

(आयातित कलपुर्जों व आँटोमैटिक मशीनों द्वारा बने कैसेट)

**शताब्दी स्थल पर हमारे स्टाल में ही उपलब्ध**

असली क्वालिटी के लिए कैसेट कवर पर AKC का निशान अवश्य देखें

कुन्स्टोकॉम इलैक्ट्रोनिक्स (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
(ASSOCIATES OF AKC HOLDINGS, WEST GERMANY)
न०. 14, मार्केट-2, फेस-2, अशोक विहार, देहली-52
फोन : 744170, 7118326 टैलेक्स : 31 4623 AKC

नोट :— वड़ी संख्या में इस कैसेट के आर्डर पर संस्थाओं को कल्पनातीत छूट।



दैनिक सन्ध्या, यज्ञ व भजन

का अत्यन्त शुद्ध उच्चारण व मधुर आवाज में रिकार्ड किया

फोन : 744170, 7118326 टैलेक्स : 31 4623 AKC IN

... संख्या में इस कैसेट के आर्डर पर संस्थाओं को कल्पनातीत छूट।